प्रस्तावना

राजस्थान पिछड़ा हुआ राज्य रहा है, क्योंकि पहले सामंतवादी शासन के अन्तर्गत इसके आर्थिक साधन कभी भी एकत्रित एवं संगठित नहीं किए जा सके। देश के स्वतन्त्र होने के पश्चात् राजस्थान का निर्माण हुआ। राजस्थान सरकार जनसहयोग से राज्य का विकास करने के लिए कटिबद्ध है।

राजस्थान के नागरिक होने के कारण हम सबको अपने राज्य के विषय में ज्ञान होना आवश्यक है। राजस्थान विश्वविद्यालय तथा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की विभिन्न परीक्षाओं—विशेषतः बी० कॉम द्वितीय खंड तथा इन्टर वाणिज्य के अनिवार्य प्रश्न पत्र, आर्थिक एवं वाणिज्य भूगोल, बी० कॉम, बी० ए०, इन्टर वाणिज्य एवं कला के आर्थिक लेख के प्रश्नपत्रों में भी राजस्थान से सम्बन्धित प्रश्न पूछे जाते हैं। इनके अतिरिक्त आर० ए० एस० की परीक्षा में भी राज्य से सम्बन्धित प्रश्न पूछे जाते हैं। अतः प्रस्तुत पुस्तक इसी दृष्टिकोण से लिखने का प्रयासमात्र है।

समस्त सूचनाएं एवं आंकड़े अधिकृत तथा सरकारी सूत्रों से लिए गये हैं ताकि पुस्तक प्रामाणिक बन सके। राजस्थान के सार्वजनिक सम्पर्क कार्यालय के प्रति हम अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं जिनके विभिन्न प्रकाशनों से सामग्री स्वतन्त्रता पूर्वक ली गई है।

पुस्तक के सम्बन्ध में जो विद्वान अपनी सम्मति प्रेषित करेंगे अथवा अधिक उपयोगी बनाने के लिए परामर्श देंगे, उनके प्रति लेखक आभारी रहेंगे।

१ अक्टूबर, १९५८ ई०

कैलाश बहादुर सक्सेना
विश्वनाथ इक्कू

विषय-सूची

पृष्ठ

अध्याय : एक

राजस्थान का परिचय

स्थिति व विस्तार—राजस्थान राज्य भारत के उत्तरी-पश्चिमी भाग में स्थित है। इसकी भौगोलिक स्थिति २३°३' से ३०° १२' उत्तरी अक्षांशों तथा ६९°३०' से ७८°१७' पूर्वी देशान्तरों के मध्य है[1]। इसका आकार विषम-कोण चतुर्भुज के समान है। यह राज्य पूर्व से पश्चिम तक ५४० मील और उत्तर से दक्षिण तक ५१० मील है। राजस्थान का वर्तमान क्षेत्रफल १,३२,२२७ वर्ग मील[2] है। क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत में इसका तृतीय स्थान है जो निम्नलिखित तालिका[3] से स्पष्ट है—

राज्य		क्षेत्रफल
बम्बई	....	१,९०,९१९ वर्ग मील
मध्य प्रदेश	...	१,७१,२०१ वर्ग मील
राजस्थान	.	१,३२,२२७ वर्ग मील

सीमा—राजस्थान के उत्तर में पंजाब, पूर्व में उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश, दक्षिण में मध्य प्रदेश और बम्बई राज्य; और पश्चिम तथा उत्तर-पश्चिम में पश्चिमी पाकिस्तान के सिंध व भावलपुर राज्य हैं। पाकिस्तान के साथ राजस्थान की सीमा लगभग ७३० मील तक मिली हुई है। ऊपर बतलाया गया है कि राजस्थान का आकार विषम-कोण चतुर्भुज के समान है तथा इसके कोण उत्तर, पश्चिम, दक्षिण और पूर्व में क्रमशः बीकानेर, जैसलमेर, बांसवाड़ा व धौलपुर की बाह्य सीमाएँ हैं[3]।

१—The Imperial Gazetteer of India, vol. XXI तथा India at a Glance, p 564 published by Orient Longmans Ltd.

२—Basic Statistics Rajasthan 1957, p. 1

३—India 1957, p. 11

राजस्थान में पश्चिम और उत्तर में जैसलमेर, जोधपुर और बीकानेर; पूर्व व दक्षिण–पूर्व में जयपुर, भरतपुर, धौलपुर, करौली, बूदी, कोटा, व झालावाड़ हैं, दक्षिण में प्रतापगढ, बाँसवाड़ा, डूगरपुर व उदयपुर हैं, और दक्षिण–पश्चिम में सिरोही है। मध्य में हृदय की भाति, अजमेर है।

राजस्थान की प्राकृतिक उत्पत्ति—राजस्थान की प्राकृतिक उत्पत्ति के सम्बन्ध में भूगोल विशेषज्ञों की दो प्रमुख विचार-धाराएँ हैं। उनमें से प्रत्येक का सक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है।

प्रथम—विचारधारा के अनुसार, सैकड़ों वर्ष-पूर्व इस समस्त भाग में टेथिस सागर विस्तृत था। शनैः शनै सागर पीछे हटता गया, भूमि ऊपर आती गई, जिसके परिणाम स्वरूप आज भी राजस्थान के अधिकाश भाग में बालू रेत ही दृष्टिगोचर होती है। इसके अतिरिक्त, इस कथन की इस तथ्य का उल्लेख करके भी पुष्टि की जाती है कि साभर झील इस समुद्र का ही एक भाग है जो कि किसी समय इस समस्त भाग में विस्तृत था। इस प्रकार, जब समुद्र के स्थान पर भूमि हो गई तो मनुष्य पड़ोस के देशों से आकर यहा निवास करने लगे।

द्वितीय—विचारधारा यह है कि सैकड़ों व हजारों वर्ष पूर्व यह बड़ा उन्नत एव विकसित भाग था, तथा यह भी कहा जाता है कि ऋग्वेद, यहा प्रवाहित होने वाली, सरस्वती नदी के किनारे बैठ कर लिखा गया था। यह नदी कालातर में राजस्थान के रेगिस्तान में शुष्क होकर विलीन होगई, वर्षा क्रमशः कम होती गई, भूमि के उपजाऊपन मे क्षीणता आ गई। यह प्रदेश इतना अच्छा था कि अनेक ऋषि–मुनि सरस्वती व अन्य नदियों के किनारे ईश्वर-चिंतन किया करते थे। सीकर जिले में हर्षगाव के निकट 'चतुर्धारा' (चार-धाराओं का सगम) नामक स्थान है, जो इस भाग में नदियों की विद्यमानता की पुष्टि करता है। इस प्रकार पानी की बाहुल्यता एव भूमि के उपजाऊ होने के कारण अन्य देशों एव अन्य भागों से मनुष्य आकर यहा बस गये। वे नदिया अपने डेल्टा बनाती रहीं—जिस प्रकार आज गगा नदी व सिंध नदी आदि बना रही है—और अत में वे सूख गई और केवल रेत ही शेष रह गई।

राजस्थान की राजनैतिक उत्पत्ति—'राजस्थान' शब्द का उल्लेख सर्वप्रथम टॉड ने किया था।

तत्कालीन राजपूताने (वर्तमान राजस्थान) का अतीत इतिहास ज्ञात करने के लिए प्राचीन ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हैं। जयपुर के निकट बैराठ में अशोक सम्राट (ईसा से लगभग २५० वर्ष पूर्व) के समय के दो शिलालेख प्राप्त हुए हैं, जिनसे अनुमान किया जाता है कि अशोक का राज्य पश्चिम की ओर राजस्थान के इस भाग तक अवश्य था।

इतिहास प्रसिद्ध, चीन का यात्री ह्वेन चांग (सन् ६२९ से ६४५) जब भारत में आया था, उस समय राजस्थान (तत्कालीन राजपूताना) चार प्रमुख भागों में विभक्त था जो कि गुर्जर (पश्चिमी राज्य, बीकानेर और शेखावाटी का भाग), बदारी (दक्षिणी व कुछ मध्य राजस्थान के राज्य); बैराठ (जयपुर, अलवर तथा टोंक का एक भाग), और मथुरा (भरतपुर, धौलपुर व करौली) राज्यों में विभक्त था। उज्जैन के राज्य में कोटा, झालावाड़ तथा टोंक का कुछ भाग सम्मिलित था।

सातवी शताब्दी के आरम्भ से ग्यारहवीं शताब्दी तक अनेक राजपूत राजवंशों का उदय हुआ। गहलोत—जो कि आजकल सिसोदिया कहलाते हैं—गुजरात से यहां आये और मेवाड़ के दक्षिणी-पश्चिमी भाग पर अधिकार कर लिया; उनका शिला लेख सन् ६४६ का राजस्थान में पाया गया है। इनके कुछ वर्षों पश्चात् परिहार वंश के लोग आये और जोधपुर के निकट मंडोर में राज्य करने लगे। आठवीं शताब्दी में चौहान व भाटी वंश के लोग आये जो कि क्रमशः सांभर व जैसलमेर में बस गये। सबके पश्चात् परमार और सोलंकी वंश आये जो दक्षिण-पश्चिम में शक्तिशाली होने लगे। चौहान वंश धीरे धीरे दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण-पूर्व में सिरोही, बूंदी और कोटा की ओर बढ़ने लगे। सन् ११२८ के लगभग कछवाहा वंश ग्वालियर से आया और जयपुर में रहने लगा। तेरहवीं शताब्दी के आरम्भ में कन्नौज से राठोर वंश आया और मारवाड़ में रहने लगा। झालावाड़ का झाला राज्य सन् १८३८ में स्थापित हुआ। भरतपुर, धौलपुर आदि में जाट वंश ने प्रभुत्व जमा लिया।

अंग्रेजों के कृपापात्र एवं कठपुतली प्रसिद्ध सरदार अमीरखा को टोंक रियासत वाला क्षेत्र सन् १८१७ में दे दिया गया ।

इतने प्राचीन इतिहास को छोड़कर, अब केवल नवीनतम इतिहास का ही संक्षेप में परिचय देंगे ।

वर्तमान राजस्थान की स्थापना होने के पूर्व यह 'राजपूताना' कहलाता था जिसमें अजमेर–मेरवाडा के अतिरिक्त २० रियासतें सम्मिलित थीं । राजस्थान का निर्माण निम्नलिखित छः चरणों [1] में हुआ—

(१) राजस्थान राज्य के निर्माण में राज्यों के विलयनकरण का आरम्भ १७ मार्च १९४८ को भरतपुर, धौलपुर, करौली तथा अलवर राज्य से हुआ । इन राज्यों का एकीकरण किया जाकर 'मत्स्य संघ' का निर्माण हुआ । महाराजा धौलपुर इस संघ के राजप्रमुख बनाये गये थे । मत्स्य संघ का क्षेत्रफल ७,५३६ वर्ग मील था और राजधानी अलवर थी ।

(२) द्वितीय चरण में, एक सप्ताह पश्चात्, अर्थात् २५ मार्च १९४८ को नौ रियासतों—बांसवाड़ा, बूंदी डूंगरपुर, झालावाड़, किशनगढ, कोटा, प्रतापगढ, शाहपुरा और टोंक—को मिलाकर राजस्थान का निर्माण किया गया । वास्तव में, राजस्थान संघ के निर्माण में यही प्रथम एवं दृढ कदम था । महाराव कोटा इस संघ के राजप्रमुख तथा महारावल डूंगरपुर उप-राजप्रमुख बनाए गये ।

(३) १८ अप्रैल १९४८ को उदयपुर राज्य भी इस संघ में सम्मिलित हो गया और अब इसका नाम 'संयुक्त राजस्थान संघ' हो गया । वर्तमान राजस्थान के निर्माण के लिए मार्ग भी यहीं से प्रशस्त होता है । भारत के प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने इसका उद्घाटन किया । महाराणा

---

[1]—India at a Glance p. 564 published by Orient Longsmans Ltd., Basic Statistics Rajasthan 1957, p. 1, 1958 Hindustan Year Book, p. 751; राजस्थान परिचय ग्रन्थ, पेज ३३, और, हमारे देश का आर्थिक व व्यापारिक भूगोल by सक्सेना एवं द्विवेदी, के आधार पर ।

उदयपुर राजस्थान संघ के राजप्रमुख तथा महाराव कोटा उप-राजप्रमुख बनाये गये।

(४) ३० मार्च सन् १९४९ को वृहत् राजस्थान संघ की स्थापना बीकानेर, जयपुर, जैसलमेर और जोधपुर राज्यों—जो राजपूताने के बड़े, महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली राज्य थे—को मिलाकर की गई। राजधानी जयपुर रखी गई व जयपुर नरेश महाराजप्रमुख बनाए गये।

(५) लगभग १॥ महीने के पश्चात्, १५ मई १९४९ को मत्स्य संघ भी वृहत् राजस्थान संघ में मिला दिया गया। वृहत् राजस्थान के क्षेत्रफल में २६ जनवरी १९५० को पुनः वृद्धि हुई जब सिरोही राज्य इसमें मिलाया गया।

(६) इस प्रकार २५ जनवरी १९५० से १ नवम्बर १९५६ तक राजस्थान संघ में पहले का सम्पूर्ण राजपूताना सम्मिलित रहा। १ नवम्बर १९५६ को राज्यों का पुनर्गठन हुआ और राजस्थान में अजमेर-मेरवाड़ा, आबू तहसील एवं सुनेलटप्पा क्षेत्र, सम्मिलित कर दिये गये और राजस्थान का सिरोंज क्षेत्र मध्यप्रदेश में मिला दिया गया। यह हमारे राजस्थान का वर्तमान रूप है। नीचे की तालिका मे राजस्थान निर्माण की झलक स्पष्ट होगी—

राजस्थान-निर्माण[1]

क्रम संख्या	स्थापित हुए संघ का नाम	स्थापना तिथि	सम्मिलित हुए राज्यों के नाम	क्षेत्रफल (वर्गमील)
१.	मत्स्य	१७.३.४८	१. अलवर ..	. ३,१५८
			२. भरतपुर ...	१,६७८
			३. धौलपुर	. १,१७३
			४. करौली ..	.... १,२२७

१—Basic Statistics Rajasthan, 1957 P. 1

क्रम संख्या	स्थापित हुए संघ का नाम	स्थापना तिथि	सम्मिलित हुए राज्यों के नाम	क्षेत्रफल (वर्गमील)
२.	राजस्थान	२५.३ ४८	१. बांसवाड़ा	.... १,६४६
			२. बूंदी ...	२,२०५
			३. डूंगरपुर ...	.. १,४६०
			४. झालावाड़...	. ८२४
			५. किशनगढ़...	८३७
			६. कोटा	.. ५,७१४
			७. प्रतापगढ़	८७३
			८ शाहपुरा ...	... ४०५
			९ टोंक	२,५६३
३.	संयुक्त राजस्थान (२+३)	१८ ४ ४८	१. उदयपुर . .	१३,१९०
४	वृहत् राजस्थान संघ (२+३+४)	३०.३ ४९	१. बीकानेर	२३,१८१
			२. जयपुर	१५,६३०
			३. जैसलमेर	...१५,९८०
			४ जोधपुर	३६,१२०
५.	वृहत् राजस्थान संघ (१+२+३+४)	१५ ५.४९	१. मत्स्य	
६	राजस्थान	२६.१.५०	१ सिरोही ..	१,६२२
७	राजस्थान (पुनर्संगठित) १+२+३×४+६+७	१.११ ५६	१. अजमेर .	२,४१७
			२ आबू	३०४
			३. सुनेलटप्पा . .	१५०
			४. सिरोंज (मध्य प्रदेश में सम्मिलित)	८५०

प्रशासनिक विभाग
(Administrative Divisions)

शासन-व्यवस्था की दृष्टि से राजस्थान पांच विभागों (Divisions) और २६ जिलों में बांट दिया गया है। इन विभागों का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया गया है।

(१) अजमेर विभाग—इस विभाग में पहले की अलवर, जयपुर, भरतपुर व टोंक रियासतें सम्मिलित हैं। इस विभाग में ८ जिले हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं—अजमेर, अलवर, भरतपुर, जयपुर, झुंझनू, सवाई माधोपुर, सीकर और टोंक। इस विभाग का क्षेत्रफल लगभग २७२७८ वर्ग मील है। क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान में दूसरा बड़ा विभाग है।

(२) जोधपुर विभाग—इस विभाग में पहले की जोधपुर, जैसलमेर, और सिरोही रियासतें सम्मिलित हैं। इस विभाग में ७ जिले हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं—जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर, जालौर, नागौर, पाली और सिरोही। इस विभाग का क्षेत्रफल लगभग ५३ हजार वर्ग मील है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह विभाग सबसे बड़ा है।

(३) बीकानेर विभाग—यह विभाग पहले की बीकानेर रियासत है। इसमें तीन जिले हैं—बीकानेर, चूरू और गंगानगर। इस विभाग का क्षेत्रफल २३, ६४३ वर्गमील है, अतः क्षेत्रफल की दृष्टि से इस विभाग का तीसरा स्थान है।

(४) उदयपुर विभाग—यह विभाग पहले की मेवाड़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़ कुशलगढ बांसवाड़ा और शाहपुरा रियासतें मिलाकर बनाया गया है। इस विभाग में ५ जिले हैं—उदयपुर, चित्तौड़गढ, भीलवाडा, डूंगरपुर और बांसवाड़ा। इस विभाग का क्षेत्रफल १८,३७६ वर्गमील है और क्षेत्रफल की दृष्टि से इसका चौथा स्थान है।

(५) कोटा विभाग—इस विभाग में कोटा, बूंदी और झालावाड़ रियासतें सम्मिलित की गई हैं। इस भाग में तीन जिले हैं जिनके नाम भी यही हैं, अर्थात् कोटा, बूंदी और झालवाड। इस विभाग का क्षेत्रफल ६३४४ वर्गमील है। अत क्षेत्रफल की दृष्टि से यह विभाग सबसे छोटा है और इसका पाचवा स्थान है।

अध्याय : दो

प्राकृतिक दशा

वर्तमान राजस्थान की गणना क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत के सबसे बड़े राज्यों में की जाती है। राज्य का क्षेत्रफल १, ३२, २२७ वर्गमील है। इतने बडे क्षेत्रफल के होने के कारण राज्य की प्राकृतिक दशा सर्वत्र समान नहीं है। एक ओर पहाड़ है तो दूसरी ओर मैदान, एक ओर रेगिस्तान है तो दूसरी ओर लहलहाते हुए मैदान। मैदान, पहाड़, पठार, रेगिस्तान, प्राकृतिक झीलें आदि विषमताओं से परिपूर्ण राज्य भारत में राजस्थान के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है। यदि यह कह जाय कि राजस्थान प्रकृति की कला का नमूना है तो कदाचित अतिशयोक्ति न होगी।

अरावली पर्वत श्रृंखला (जो राज्य के दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर चला गया है) ने राजस्थान को वास्तव में दो भागों में विभक्त कर दिया है—उत्तरी पश्चिमी भाग और दक्षिणी-पूर्वी भाग। राजस्थान का लगभग ३/५ भाग उत्तरी–पश्चिमी भाग में है और शेष २/५ भाग दक्षिणी-पूर्वी भाग में है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि राज्य का उत्तरी-पश्चिमी भाग, दूसरे भाग (दक्षिणी-पूर्वी भाग) से बड़ा है। उत्तरी–पश्चिमी भाग शुष्क एव अधिकांश रेगिस्तानी है; दक्षिणी-पूर्वी भाग में मैदान एव पठार हैं। इस प्रकार, स्थूल रूप से राजस्थान के निम्नलिखित चार प्राकृतिक भाग हैं—

१. रेतीला भाग—उत्तरी-पश्चिम में;

२ पहाड़ी भाग—लगभग मध्य में अरावली श्रृखला,

३. मैदानी भाग—अरावली के पूर्व में,

और, ४. पठारी भाग—दक्षिण-पूर्व में।

१. रेतीला भाग—यह भाग राजस्थान के उत्तर-पश्चिम में स्थित है। यह रेतीला भाग अरावली पर्वत के पश्चिमी ढाल से सिन्ध (पश्चिमी पाकिस्तान) तक विस्तृत है। इस भाग में बालू रेत ही है तथा स्थान-स्थान पर बालू रेत के टीले, जो 'धोरे' कहलाते हैं बालू की पहाड़ियों की भांति दिखाई देते हैं। ये
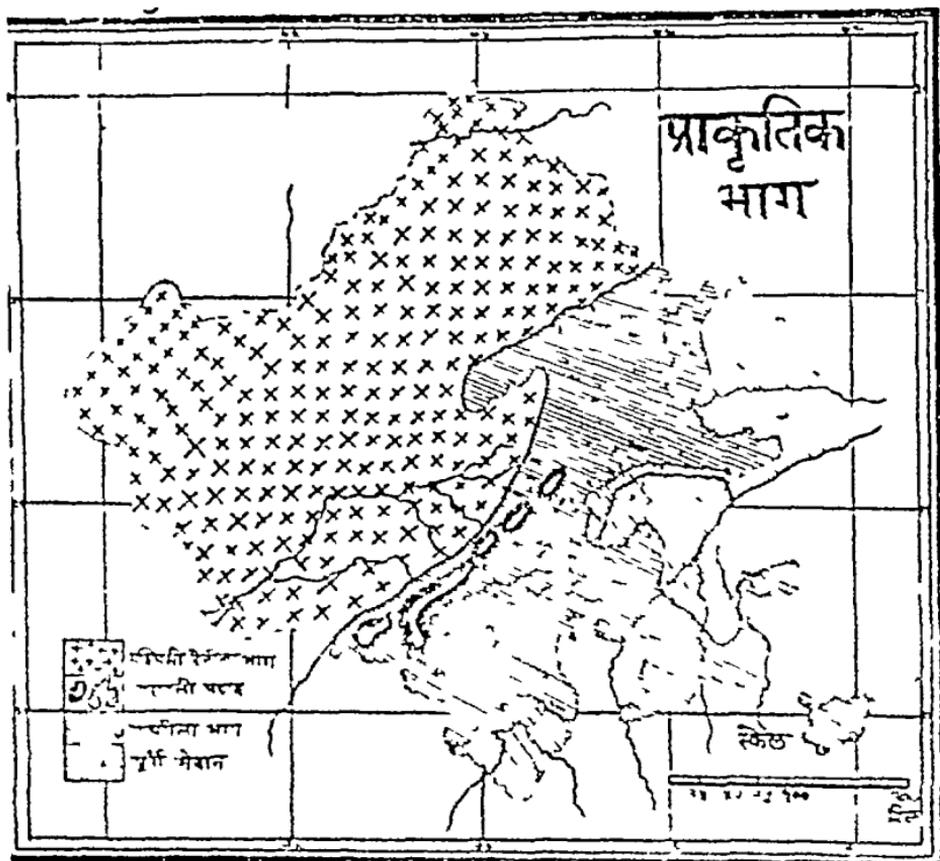
चित्र संख्या १—अधिकांश भाग रेगिस्तानी है।

टीले स्थायी नहीं हैं और वायु के साथ साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले जाते हैं। कभी कभी तो एक घण्टे से भी कम अवधि में ये अपना स्थान परिवर्तन कर लेते हैं।

इस भाग में जोधपुर डिवीजन और बीकानेर डिवीजन के अधिकाश भा सम्मिलित हैं। राजनैतिक दृष्टि से इस मरुस्थली भाग में बीकानेर, चूरू, नागौर गगानगर, जैसलमेर, जोधपुर, जालौर, पाली और बाडमेर जिले सम्मिलित हैं इस भाग में राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का लगभग ५७ ८ प्रतिशत भाग है। कुल जन सख्या का लगभग ३० प्रतिशत भाग इस ही क्षेत्र में निवा करता है[1]।

इस भाग में गरमी बहुत ही अधिक पडती है। गर्मियों में आधियों अधडों का जोर रहता है। वर्षा बहुत कम होती है। ज्यों ज्यों उत्तर अथव पश्चिम को ओर जाते हैं, वर्षा प्राय नही के बराबर मिलती है। मीलों तक पान कही नही मिलता है। कुए बहुत ही कम हैं। कुओं में पानी २००–३०० फी की गहराई पर मिलता है। अरावली पर्वत के निकटवर्ती भागों में साधारण खेत की जाती है। इस प्रकार इस भाग में खेती केवल नाम-मात्र को ही होती है उद्योग-धन्धों का अभाव है। पशुओं में ऊट ही महत्वशील पशु है। स्पष्ट है कि इस भाग में मनुष्यों का जीवन बहुत ही कठिन है अतः जन सख्या बहुत ही कम है। लूनी इस भाग की प्रमुख व सबसे बडी नदी है जो वर्षा के बाद शुष्क हो जाती है।

२ पहाडी भाग—इस भाग में अरावली पर्वत है जो राजस्थान के लगभग मध्य में दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर फैले हुए हैं। अरावली पर्वत की श्रेणिया दक्षिण-पश्चिम में सिरोही से आरम्भ होकर उत्तर-पूर्व में खेतडी तक तो प्राय शृखलाबद्ध हैं, किन्तु छोटी छोटी शृखलाओं में दिल्ली तक विस्तृत हैं। भूगोल के विद्वानों का मत है कि अरावली पर्वत भारत की सबसे प्राचीन पवत श्रेणी है। जिस समय हिमालय पर्वत का जन्म भी नही हुआ था, उससे भी पहले ये पर्वत विद्यमान थे।

अजमेर से आबू तक यह पर्वत श्रेणी अटूट है किन्तु आगे इसकी शृखला अनेक स्थानों पर टूट गई है। अरावली पर्वत की औसत ऊचाई तीन हजार फीट है और लम्बाई लगभग ४३० मील है। विस्तार की दृष्टि से,

---

[1]–Census of India 1951, Vol. X Part I A p 6

राजस्थान के प्राकृतिक भागों में यह सबसे छोटा भाग है क्योंकि इस भाग में राज्य को ६ ३ प्रतिशत भूमि व लगभग १४ प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है[1]। राजस्थान के सिरोही, बांसवाडा, डूंगरपुर व उदयपुर जिले इस ही भाग में हैं। इस भाग में वर्षा अच्छी होजाती है, अत: जनसंख्या भी रेतीले भाग की अपेक्षा अधिक है।

अरावली पर्वत की प्रमुख शृंखला को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है—

(क) सिरोही से सांभर झील तक की शृंखला,

और. (ख) सांभर झील से सिंघाने (खेतडी के निकट) तक की शृंखला।

(क) सिरोही से सांभर झील तक की शृंखला—यह शृंखला अपेक्षाकृत अधिक ऊंची एव चौड़ी है। यह मेवाड और मारवाड कमिश्नरियों को पृथक करता है। इस पर्वत-शृंखला में अनेक ऊंची चोटियां हैं जिनमें ये प्रमुख हैं.—गुरुशिखर अथवा आबू (५,६५०), कुम्भलगढ (उदयपुर) गोरम (३०७५ फीट), और तारागढ (२,८५५) अजमेर में। इस शृंखला में अनेक प्राकृतिक दर्रे हैं जिनको 'नाल' कहते हैं। इनमें से 'देसूरी नाल' और 'हाथी दर्रा नाल' मुख्य हैं। यह उल्लेखनीय है कि प्राचीनकाल में मेवाड और मारवाड के लोग इन दर्रों द्वारा आवागमन करते थे।

(ख) सांभर झील से सिंघाने तक की शृंखला—यह शृंखला सांभर झील से उत्तर-पूर्व सिंघाने तक गई है। यह शृंखला प्रथम शृंखला (सिरोही से सांभर झील तक) से कम ऊंची, कम चौडी और अधिक टूटी हुई है। इस शृंखला से नदियां भी बहुत कम निकलती हैं, क्योंकि इधर वर्षा कम होती है। इस पर्वत-शृंखला में तीन ऊंची चोटियां हैं—रघुनाथगढ (३,५०० फीट) हर्ष मानकेतु और लोहार्गल। सिंघाने से यह शृंखला दक्षिण की ओर अलवर जिले में चला गया है।

हिमालय व नीलगिरी पर्वत (दक्षिण भारत) के मध्य आबू पर्वत सबसे ऊंचा पर्वत है।

---

[1] वही

अरावली पर्वत से लाभ

राजस्थान को अरावली पर्वत से अनेक लाभ हैं जिनमें से प्रमु
निम्नलिखित हैः—

(१) **नदिया**—अरावली पर्वत से अनेक नदिया निकलती हैं। यद्य
समस्त नदियां वर्षा ऋतु के पश्चात् सूख जाती हैं किंतु अब अनेक नदियों प
बाध बनाये जा रहे है जिनमें इनका पानी एकत्रित किया जावेगा और फि
नहरें निकाल कर सिंचाई होगी जिसमे कृषि का क्षेत्र बढेगा और खाद्यान्न
अन्य उपज में वृद्धि होगी।

(२) **वन**—अरावली पर्वत की ढालों पर अनेक भागों में घने जगल
व अनेक भागों में साधारण जगल हैं। इन जगलों की सम्पदा का अभी तक ठी
उपयोग नहीं हो रहा है। इस समय जलाने के लिए लकड़ी बहुतायत से प्रा
की जा रही है।

(३) **चरागाह**—अरावली पर्वत की ढालों एव नीचे की भूमि प
चरागाह मिलते हैं। इन चरागाहों में भेड, बकरिया, गाय पशु चरते हैं।

(४) **वर्षा**—समुद्र की ओर से आने वाली हवाओं को थोडी बहु
रोकने के लिये केवल यही एक पर्वत श्रेणी राजस्थान में है।

(५) **खनिज**—अरावली पर्वत बहुत प्राचीन है, अत इसके क्षेत्र
अनेक प्रकार के खनिज पदार्थ पाये जाते हैं। यद्यपि उन खनिज पदार्थों
अभी राजस्थान में पूर्ण उपयोग नहीं हो पा रहा है, किन्तु आशा है राज्य
आशाप्रद औद्योगिक विकास में इनका अत्यन्त महत्वपूर्ण योग होगा।

(६) **ग्रीष्म स्थान**—अरावली पर्वत की गुरुशिखर अथवा आबू ग्रीष्म
ऋतु में अनेक व्यक्तियों का आकर्षण केन्द्र रहता है। इस कारण यहा होटल
उद्योग को भी प्रोत्साहन मिला है।

(७) **प्रहरी**—यह प्रकृति के विरुद्ध ही प्राकृतिक प्रहरी हैं। राजस्था
के पश्चिम भाग से बालू रेत के टीलों को पूर्वी भाग में नहीं बढने देता है।
इस प्रकार रेगिस्तान के प्रसार के रोकने में सहायक हुआ है।

३. मैदानी भाग—अरावली पर्वत के पूर्व में राजस्थान का मैदानी भाग है। यह मैदान आगे गंगा व यमुना के मैदान तक चला गया है। इस भाग में अलवर, भरतपुर, जयपुर, सवाई माधोपुर, टोंक, सीकर, झुंझुनू तथा भीलवाड़ा जिले हैं। सम्पूर्ण राज्य के २३.३ प्रतिशत भाग में यह मैदानी प्रदेश विस्तृत है। इस विभाग में राजस्थान की ४२ प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है।

यद्यपि सीकर व झुंझुनू जिलों में अपेक्षाकृत जनसंख्या कम है किंतु शेष भागों में जनसंख्या बहुत घनी है। वास्तव में राजस्थान का यही भाग सबसे अधिक घना बसा हुआ है। इसका प्रमुख कारण यह है कि यह मैदान प्राय. समतल है और यहां अच्छी मात्रा में वर्षा हो जाती है। इस भाग में प्रमुख व्यवसाय कृषि है। पशु चराने का व्यवसाय भी महत्वशील है। औद्योगिक दृष्टि से भी यह भाग अपेक्षाकृत अधिक विकसित है।

४. पठारी भाग—राजस्थान का दक्षिणी-पूर्वी भाग पठारी है। यह हाड़ौती के पठार के नाम से विख्यात है। आगे चल कर यह पठार मालवा के पठार से मिल जाता है। इस भाग में चित्तौड़, झालावाड़, बूँदी और कोटा जिले हैं। यह प्रदेश राजस्थान के ९·६ प्रतिशत भाग में विस्तृत है तथा इसमें लगभग १३ प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है।

इस प्रदेश में वर्षा अच्छी हो जाती है किन्तु जमीन पठारी होने के कारण कृषि का क्षेत्र बहुत कम है। चंबल, बनास व बाणगंगा इस भाग की मुख्य नदियां हैं।

राजस्थान की प्रमुख पर्वत श्रेणियाँ

अरावली पर्वत का विवरण हम पीछे दे चुके हैं। जयपुर व अलवर नगर के निकट भी पहाड़ हैं। भरतपुर क्षेत्र में स्थानीय महत्व की पर्वत श्रेणी है, जिसकी सबसे ऊंची चोटी अलीपुर है जो १,३५७ फीट ऊंची है। इसके दक्षिण में करौली की पहाड़ियां हैं जो कि कहीं भी १,६०० फीट से ऊंची नहीं है। दक्षिण-पश्चिम में नीची किंतु लगातार (अर्थात टूटी हुई नहीं) पर्वत-श्रेणी है जो मांडलगढ़ (उदयपुर में) से उत्तर-पूर्व की ओर बूंदी को पार करती हुई

कोटा में इन्द्रगढ के निकट तक जाती है। इन पहाड़ियों के दक्षिणी-पूर्वी ढाल लगभग २५ मील तक बिल्कुल सीधे हैं और मार्गों के लिए खुले हुए भाग प्राय. नही हैं।

मुकन्दवाडा पर्वत श्रेणी चम्बल से कोटा के दक्षिणी-पश्चिम भाग में होते हुई झालरापाटन से आगे तक जाती है।

इनके अतिरिक्त अन्य कोई पर्वत-श्रेणी उल्लेखनीय नहीं है, किन्तु यह ध्यान रहे कि केवल मरुस्थली भाग के अतिरिक्त प्राय सम्पूर्ण राजस्थान में छोटी-मोटी पहाड़िया हैं। जोधपुर के दक्षिण-पश्चिम में बाड़मेर के निकट दो पर्वत श्रेणियाँ हैं जो लगभग २,००० फीट ऊँची हैं।

राजस्थान की प्रमुख नदियां

राजस्थान जैसे शुष्क भागों में नदियो का विशेष महत्व है। राज्य में बडी तथा वर्ष पर्यन्त प्रवाहित होने वाली नदियों का अभाव ही है। राज्य की नदियों में वर्षा-ऋतु में तो पर्याप्त जल रहता है किन्तु बाद में वे शनै: शनै: शुष्क हो जाती हैं। इन नदियों के किनारे पर कुएँ खोद लिए जाते हैं, जिनकी सहायता से सिंचाई की जाती हैं। आजकल विभिन्न नदियों के पानी को रोक कर बांध आदि बनाए जा रहे हैं जिनसे सिंचाई के लिए जल उपलब्ध होगा व जल विद्युत का भी निर्माण किया जावेगा। राजस्थान की प्रमुख नदियां निम्नलिखित हैं —

१ चम्बल—चम्बल नदी का प्राचीन नाम चर्मावती है। इसका उद्गम स्थान विंध्याचल पर्वत है। यह मध्य प्रदेश में ग्वालियर, इन्दौर व सीतामऊ के निकट बहती हुई राजस्थान के कोटा डिवीजन में प्रवेश करती है, तत्पश्चात धौलपुर के निकट बहती हुई उत्तर-प्रदेश में यमुना नदी में मिल जाती है।

चम्बल नदी की लम्बाई लगभग ६५० मील व अधिकतम चौडाई लगभग २,००० फ़ीट है। वर्षा ऋतु में तो इस नदी में पर्याप्त पानी रहता है किन्तु गर्मियों में पानी बहुत कम हो जाता है। इस प्रकार राजस्थान में प्रवाहित होने

वाली केवल एक यही नदी ऐसी है जिसमें वर्ष-पर्यन्त थोड़ा बहुत पानी रहता है। आजकल इस नदी पर कोटा के निकट बांध बनाए जा रहे हैं।

२ बनास नदी—महत्व की दृष्टि से चम्बल के बाद बनास नदी का स्थान है। इस नदी का उद्गम उदयपुर डिवीजन में कुम्भलगढ़ के निकट अरावली पर्वत में है। इस नदी की लम्बाई लगभग ३०० मील है। अरावली पर्वत के दक्षिणी-पूर्वी ढालों और मेवाड़ के पठार का पानी इसमें एकत्रित होकर बहता है। यह पहले उत्तर-पूर्व में बहती है और बाद में टोंक के पास आते आते दक्षिण की ओर मुड़ जाती है। आगे चलकर यह चम्बल नदी में मिल जाती है। कोठारी, खारी, मासी, ढिल और मोरेल नदियाँ बनास की प्रमुख सहायक नदियाँ हैं।

३ लूनी नदी—राजस्थान के उत्तर-पश्चिमी भाग में केवल लूनी नदी ही महत्वशील है। इसका उद्गम स्थान अजमेर के निकट पुष्कर घाटी में नाग पहाड़ है[1]। यह पश्चिम की ओर प्रवाहित होती है तथा जोधपुर डिवीजन में दक्षिण-पश्चिम की ओर लगभग २०० मील प्रवाहित होती हुई कच्छ की खाड़ी में गिर जाती है। लूनी नदी की अनेक सहायक नदियाँ हैं जिनमें सूकरी, जोजरी व जवाई नदिया उल्लेखनीय हैं। यह उल्लेखनीय है कि अरावली पर्वत के पश्चिम में बहने वाली केवल यही एक नदी है।

४ माही नदी—यह नदी अरावली पर्वत के दक्षिणी भाग से निकलती है। आगे चलकर डूंगरपुर की दक्षिणी सीमा व बांसवाड़ा के मध्य प्रवाहित होती हुई गुजरात में प्रवेश करती है और फिर खम्भात की खाड़ी में गिर जाती है।

५ घग्गर नदी—किसी समय यह बीकानेर राज्य के उत्तरी भाग में होकर प्रवाहित होती थी, किन्तु अब यह हनुमानगढ़ (बीकानेर डिवीजन) के पश्चिम में एक-दो मील दूर है। इसका जल दो नहरों—जो सन् १८९७ में तत्कालीन बीकानेर दरबार व भारत सरकार ने संयुक्त व्यय से बनवाई थी—द्वारा सिंचाई के लिए उपयोग किया जाता है।

---

[1]—Imperial Gazetteer of India, vol. xxi, p 86

६. बाण गंगा—यह नदी जयपुर जिले में बैराठ की पहाड़ियों से निकलती है। इस नदी की लम्बाई लगभग २३५ मील है। यह नदी पूर्व को ओर बहती हुई भरतपुर में प्रवेश करती है। इसके पश्चात् यह नदी थोड़ी दूर तक भरतपुर व उत्तर-प्रदेश की सीमा बनाती हुई प्रवाहित होती है। अन्त में फतेहाबाद (आगरा जिला) के निकट यमुना नदी में मिल जाती है।
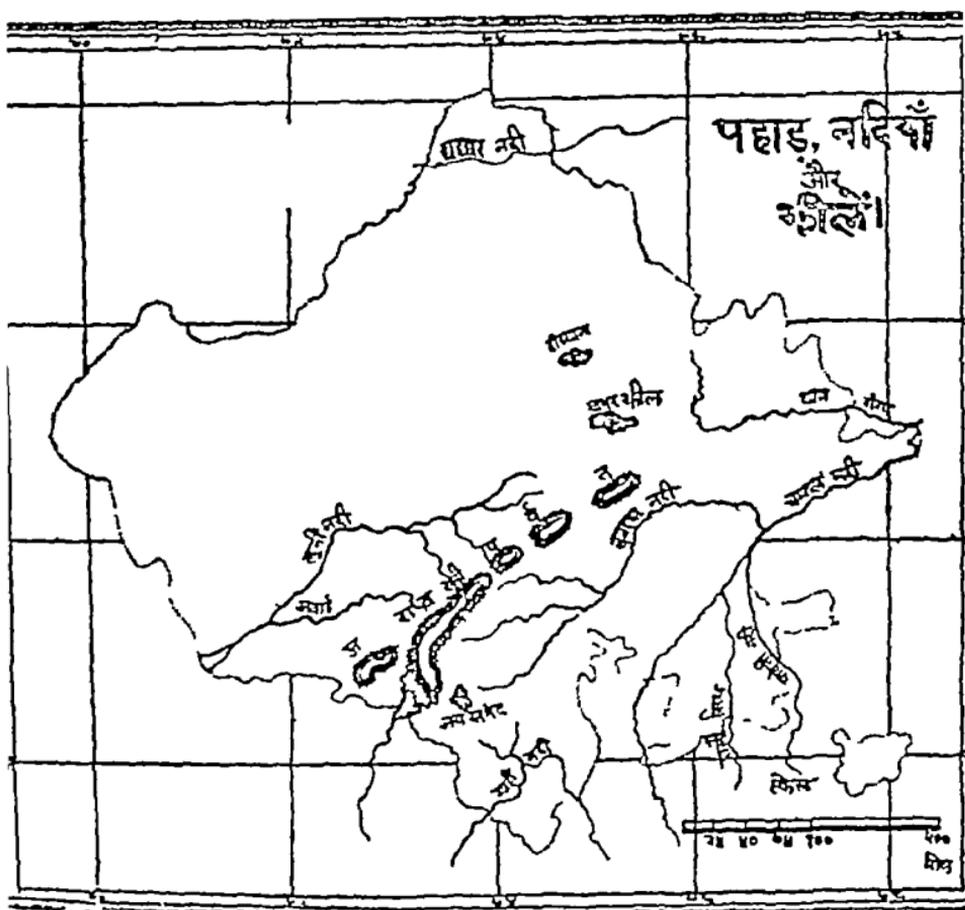
७ काकनी—यह जैसलमेर से १७ मील दूर कोटरी गाव के निकट मे निकलती है और उत्तर-पश्चिम की ओर बहती हुई 'भूज झील' बनाती है।

उपरोक्त के अतिरिक्त अन्य छोटी अथवा सहायक नदियाँ कोटा विभाग में पार्वती नदी, जयपुर विभाग में मोरेल, ढाबा, जग्गर और उदयपुर विभाग की खारी, कोठारी, मानसी व गम्भीरी हैं।

राजस्थान की प्रमुख झीलें

राजस्थान में अनेक झीलें हैं। इनमें से कुछ झीलें खारी पानी की हैं और कुछ झीलें मीठे पानी की हैं, कुछ झीलें प्राकृतिक हैं और कुछ कृत्रिम। खारी और मीठी दोनों ही प्रकार की झीलों का राजस्थान में पर्याप्त आर्थिक महत्व है। मीठे पानी की झीलों से सिंचाई तथा पीने का पानी और मछलियाँ प्राप्त होती हैं व खारे पानी की झीलों से नमक प्राप्त होता है।

१. साभर झील—यह झील २६°५३' व २७°१' उत्तरी अक्षांशों तथा ७४°५४' और ७५°१४' पूर्वी देशान्तरों के मध्य पहले की जयपुर व जोधपुर रियासतों की सीमा पर स्थित है। यह रेल मार्ग द्वारा अजमेर के उत्तर-पूर्व में ५३ मील की दूरी पर, तथा देहली के दक्षिण-पश्चिम में २३० मील दूर स्थित है। यह समुद्रतल से १२०० फीट की ऊंचाई पर स्थित है।

यह राजस्थान में ही नहीं, वरन् भारत में खारे पानी की सबसे बड़ी झील है। इसकी लम्बाई (जब यह पूरी भरी होती है) दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम की ओर लगभग २० मील है, और चौड़ाई २ से ७ मील है। इस झील का क्षेत्रफल लगभग ९० वर्ग मील है। गर्मी के महीनों में यह प्राय सूख जाती है। किन्तु जिस वर्ष अच्छी वर्षा होजाती है, तो वर्ष भर पानी रहता है। इस झील में तीन छोटी छोटी नदियाँ गिरती हैं। निकट ही सांभर कस्बा है, जहाँ औसत वार्षिक वर्षा लगभग २० इन्च है।

भारत के भूगर्भ विभाग ने इस झील का सर्वेक्षण इस झील के तल में तीन स्थानों में छेद (Bore) करके किया था और बतलाया कि इसके पेंदे (Silt) की गहराई पूर्वी किनारे पर ६० फीट, मध्य में ७० फीट और उत्तरी पश्चिमी किनारे पर ७६ फीट है। पेंदे के नीचे चट्टाने हैं जो कि अनुमान है, अरावली पर्वत श्रेणी का ही भाग है।

इस झील से अकबर व उसके उत्तराधिकारियों की शासन व्यवस्था । अहमदशाह (१७४८–१७५४) के समय तक नमक निकाला जाता रहा औ बाद में जयपुर व जोधपुर महाराजाओं के अधिकार में यह झील आ गई।

इस झील में नमक तैयार करने के लिए अनेक क्यार बने हुए हैं ठेलों के लिए पटरिया बिछी हुई हैं। इस झील के निकट दो तीन रेलवे स्टेश हैं—साभर, गुढा और कुचावन रोड़ अथवा नावा। यहा से नमक उत्तर-प्रदे मध्यप्रदेश, पजाब और नैपाल को विशेषत. जाता है।

(२) डीडवाना झील—यह जोधपुर विभाग में २७° २४' उत्तरी अक्षा तथा ७४°३५' पूर्वी देशातर पर जोधपुर नगर से लगभग १३० मील उत्तर-पूर्व । स्थित है। यह डीडवाना कस्बे के दक्षिण व दक्षिण-पूर्व में है। इस झील की लम्बा लगभग २½ मील है। इसके पेंदे में चिपचिपी काली कीचड़ है जो f साभर झील के अनुरूप प्रतीत होती होती है। इसके नीचे खारे पानी का भडा हैं। इस झील से नमक तैयार किया जाता है। कुछ नमक तो राजस्थान म (बीकानेर व जोधपुर क्षेत्र मुख्यत) ही खप जाता है व शेष निकट ही स्थित डीडवाना स्टेशन से राजस्थान क बाहर भेज दिया जाता है।

(३) लूनकरनसर झील—यह बीकानेर डिवीजन में लूनकरनसर के निकट ही खारे पानी की एक छोटी सी झील है। इसमे भी नमक निर्माण करने की योजना विचाराधीन है।

खारे पानी की उपरोक्त तीन झीलों के अतिरिक्त भी राजस्थान में अनेक छोटी छोटी झीलें हैं किन्तु महत्वशील नहीं है।

उपरोक्त तीनों खारे पानी की झीलें हैं। राजस्थान में मीठे पानी की निम्नलिखित प्रमुख झीलें हैं—

(१) जयसमन्द झील—यह झील राणा जयसिंह द्वारा सन् १६८५–१६९१ में बनवाई गई थी। यह झील राजस्थान की मीठे पानी की झीलों में सबसे बड़ी है। यह उदयपुर नगर के दक्षिण-पूर्व में लगभग ३० मील दूर स्थित है। इस झील की स्थिति ७३० ५६' व ७४° ३' पूर्वी देशान्तरों तथा २४° १३'

:और २४° १८' उत्तरी अक्षांशों के मध्य है। इस झील की लम्बाई उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर लगभग ६ मील है और इसकी चौड़ाई एक मील से पाच मील तक है। इस झील का क्षेत्रफल लगभग २१ वर्ग मील है। इसमें लगभग ७०० वर्ग मील क्षेत्र का पानी आता है। इस झील के पश्चिम में ८०० फीट से १००० फीट ऊँची पहाडी है। इस झील में छोटे बडे ७ टापू हैं जिन पर भील व मीने रहते हैं। इस झील पर ६ कलात्मक छतरियाँ व प्रासाद बने हुए हैं जो राजसी वस्तुकला का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

(२) राजसमन्द झील—उदयपुर में काकरोली स्टेशन के निकट राजसमन्द झील है। यह झील ४ मील लम्बी व लगभग पौने दो मील चौडी है। राजसमन्द के उत्तरी भाग पर, जो नौचौकी के नाम से विख्यात है, संगमरमर की २५ चौकियों पर संस्कृत के १०१७ श्लोक खुदे हुए हैं जिन पर मेवाड का इतिहास अंकित है।

(३) पिछोला झील—यह झील भी उदयपुर में ही है जिसे चौदहवी शताब्दी के अन्तिम काल में महाराणा लाखा के राज्यकाल में एक बनजारे ने बनवाई थी। इस झील के किनारों को महाराणा उदयसिंह ने ऊंचा करवाया था। यह झील ४½ मील लम्बी व १½ मील चौड़ी है। पिचोली ग्राम के निकट होने के कारण ही इसे पिचोला संज्ञा दी गई। इस झील के वक्ष पर उठे हुए दो टापुओं पर बने हुए जगमंदिर और जगनिवास दो सुन्दर महल बने हुए हैं। यह उल्लेखनीय है कि इसी पिचोला ने दिल्ली के विद्रोही शाहजादा खुर्रम को, जो आगे शाहजहाँ के नाम से विख्यात हुआ, शरण प्रदान की थी।

(४) फतहसागर झील—यह झील पिचोला झील से एक नहर द्वारा मिली हुई है। यह पिचोला झील के उत्तर में १½ मील लम्बे व १ मील चौडे क्षेत्र में विस्तृत है।

(५) आनासागर झील—यह झील अजमेर नगर के दक्षिण में पहाड़ियों के मध्य अत्यन्त रमणीय लगती है। यह झील सम्राट पृथ्वीराज के पितामह अरणोराज अथवा आनाजी ने सन् ११३५ के लगभग बनवाई थी। पूरी झील की परिधि ८ मील के लगभग है।

(६) नवलखा झील—बूंदी की नवलखा छोटी झील सुरम्य पहा
से घिरे नगर में स्थित है। पानी के मध्य पुराना मन्दिर व कलापूर्ण छत
अत्यन्त सुन्दर हैं।

(७) कोलायतजी—मरुभूखड में बीकानेर से लगभग ३० मील द
पश्चिम में कोलायतजी की प्रसिद्ध झील है जहाँ कपिल मुनि का आश्रम बतल
लाता है।

(८) गैंबसागर झील—डूंगरपुर नगर के निकट ही गैबसागर
है। इस झील के किनारे ही उदय विलास सुन्दर महल है। झील के मध्
बादल महल अत्यन्त सुन्दर है।

उपरोक्त के अतिरिक्त जोधपुर के बालसमन्द और सरदारसमन्द,
उल्लेखनीय है!

अध्याय तीन

मिट्टी

किसी भी प्रदेश में मिट्टी अपना विशेष महत्व रखती है क्योंकि मिट्टी की उर्वरा शक्ति पर ही बहुत अंशों तक कृषि की उपज निर्भर होती है। सरकार की ओर से मिट्टी का सर्वेक्षण कभी नहीं किया गया। केवल सेटिलमेंट कोडस से ही इस सम्बन्ध में सूचना प्राप्त होती है किन्तु इस स्रोत की सूचनाएँ अधिक विश्वसनीय नहीं कही जा सकती हैं क्योंकि आंकड़े वैज्ञानिक प्रणाली द्वारा एकत्रित नहीं किए गये हैं।

राजस्थान में निम्नलिखित प्रकार की मिट्टियाँ पाई जाती हैं—

(१) लाल मिट्टी (Red soil)—यह मिट्टी अरावली पर्वत के पूर्वी भागों में—मुख्यतः अजमेर, किशनगढ़, उदयपुर, डूंगरपुर और बांसवाड़ा में पाई जाती है।

यह मिट्टी लौह कण के सम्मिश्रण के कारण ही लाल दिखाई देती है। इनकी बनावट में स्थानीय विभिन्नताएं होती हैं क्योंकि जिन मूल चट्टानों से ये बनी होती हैं, उनकी भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं में अन्तर होता है। लाल मिट्टी आवश्यकरूप से लाल ही नहीं होती है, यद्यपि साधारणतः ऐसा ही होता है। इस मिट्टी में पोटाश व चूने का अंश पर्याप्त मात्रा में होता है नाइट्रोजन, फासफोरिक एसिड तथा ह्यूमस की मात्रा कम होती है। यद्यपि यह मिट्टी बारीक व गहरी होती है किंतु साधारण-उपजाऊ होती है।

(२) काली मिट्टी अथवा रेगर (Black soil or Regur)—यह मिट्टी राजस्थान में मुख्यतः २० इन्च से ३० इन्च तक की वर्षा वाले कुछ भागों में पाई जाती है। यह मिट्टी उदयपुर डिवीजन के कुछ भागों—डूंगरपुर, बांसवाड़ा, कुशलगढ़ प्रतापगढ़—और पूर्व में कोटा, झालावाड़ क्षेत्र में पाई जाती है। इस मिट्टी के बड़े बड़े मैदान नहीं हैं किंतु छोटे मैदान ही हैं।

इस मिट्टी में फासफोरिक एसिड और ह्यूमस की कमी होती है किंतु पोटाश व चूना अधिक मात्रा में पाया जाता है। भीगने पर यह फूल जाती है व चिपचिपी हो जाती है किंतु सूखने पर यह सिकुड़ जाती है और इसमें बड़ी बड़ी दरारें पड जाती हैं। इस मिट्टी में नमी रोक रखने का विशेष गुण होता है साथ ही यह मिट्टी उपजाऊ भी खूब होती है।

(३) लेटेराइट मिट्टी (Laterite Soil)—इस प्रकार की कुछ मिट्टी बांसवाड़ा, प्रतापगढ और कुशलगढ क्षेत्रों में पाई जाती है।

इस मिट्टी में चूने, नाइट्रोजन और ह्यूमस की कमी होती है अत वनस्पति उगने के लिए उपयुक्त नहीं है। किंतु रासायनिक खादो की सहायता से यह उपजाऊ बनाई जा सकती है।

(४) कच्छारी मिट्टी (Alluvial Soil)—राजस्थान के पूर्वी भाग में अनेक स्थानों पर यह मिट्टी पाई जाती है। अलवर व भरतपुर आदि में ऐसी ही मिट्टी पाई जाती है। इस मिट्टी के क्षेत्र बहुत बडे नहीं हैं।

इस मिट्टी में नाईट्रोजनकी तो कमी होती है किंतु चूना, पोटाश, फासफोरस, लोहा आदि अनेक पदार्थों की बाहुल्यता होती है। यह मिट्टी बहुत उपजाऊ होती है।

(५) रेतीली मिट्टी (Sand)—यह मिट्टी राजस्थान के अधिकांश भाग में पाई जाती है। मुख्यत: पश्चिमी और उत्तरी-पश्चिमी जयपुर, दक्षिण बीकानेर, जोधपुर का अधिकाश भाग और सम्पूर्ण जैसलमेर में ऐसी मिट्टी पाई जाती है।

ऐसी मिट्टी का कण मोटा होता है व पानी की नमी रोक रखने की शक्ति प्राय नही होती है। अत. कृषि के लिए यह मिट्टी अनुपयुक्त है।

इस प्रकार राजस्थान के विभिन्न भागो में अनेक प्रकार की मिट्टिया पाई जाती हैं। स्थूल रूप में पूर्वी व दक्षिणी पूर्वी भाग की मिट्टियां कृषि की दृष्टि महत्वपर्ण हैं और पश्चिमी व उत्तरी-पश्चिमी राजस्थान की मिट्टियाँ कृषि द

अध्याय चार

जलवायु

किसी भी प्रदेश में वहां की जलवायु विशेष महत्व रखती है क्योंकि वायु न केवल कृषि की उपज को ही प्रभावित करती है, वरन् मानव जीवन आर्थिक एवं साधारण जीवन को भी नियंत्रित करती है। जलवायु के अन्तर्गत प्रमुख तत्वों का अध्ययन किया जाता है—उस स्थान का तापक्रम तथा वहां की मात्रा।

गर्मी का मौसम—राजस्थान एक गर्म राज्य है। गर्म राज्य से तात्पर्य है कि यहां गर्मी के मौसम में बहुत कठोर गर्मी पड़ती है, इसके अतिरिक्त गर्मी मौसम अन्य मौसमों से बड़ा होता है। गर्मियों में, केवल ऊंचे पहाड़ी भाग के रिक्त, शेष सम्पूर्ण राजस्थान में बहुत गर्मी पड़ती है। विशेषतः पश्चिमी तथा री-पश्चिमी राजस्थान में गर्मी अत्यन्त ही कठोर एवं कष्टप्रद होती है। ारणत: गर्मी का मौसम अप्रैल से आरम्भ होकर अगस्त-सितम्बर तक रहता किन्तु मई व जून बहुत ही गर्म महीने होते हैं। प्राय: सम्पूर्ण राजस्थान में हवाएँ व रेत के तूफान चलते हैं किन्तु पश्चिमी व उत्तरी-पश्चिमी राजस्थान रेगिस्तानी एवं अर्द्ध-रेगिस्तानी भागों में ये तूफान अत्यन्त भयंकर होते हैं। र की कड़ी गर्मी के पश्चात राजस्थान का मरुभूमि प्रदेश रात में ठंडा हो ता है क्योंकि धूप से तप्त बालू-रेत रात होते ही शीतल होने लगती है, जिसके रण हवा भी ठंडी हो जाती है। इस कारण इस भाग में गर्मी के मौसम में रातें शीतल एवं सुहावनी होती हैं। जैसलमेर में जून में तापमान का औसत ॰ फै॰ रहता है।

नीचे की तालिका[1] में सेंटिग्रेड डिग्री में औसत तापक्रम बतलाया गया

केन्द्र	अधिकतम तापक्रम	न्यूनतम तापक्रम
अजमेर ..	४५·०	५ ६
बीकानेर .	४७ ८	- ० ५
जयपुर .	४६ १	४ ०
जोधपुर	४७ २	४ ४
सीकर ...	४६ १	० ०
उदयपुर ..	४४ ०	२ २

सर्दी का मौसम—जाडे का मौसम भी यद्यपि कठोर होता है कि सर्वत्र अत्यन्त कठोर नहीं होता है। राजस्थान के उत्तरी-पश्चिमी रेतीले भाग ठंड बहुत अधिक पडती है। कभी कभी रात में पाला भी पड़ जाता है, विशेष उत्तर में बीकानेर के समीपवर्ती भागों में। राज्य के आतरिक भागो के दिन रात के तापक्रम में अचानक और अधिक परिवर्तन होता है।

वर्षा ऋतु—राजस्थान की वर्षा की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित

(१) प्राय सम्पूर्ण वर्षा गर्मी के मौसम में होती है, अत्यन्त साधा वर्षा सर्दियों में होती है।
(२) वर्षा मानसूनी हवाओं से होती हैं।
(३) वर्षा का समय व मात्रा अनिश्चित हैं।
(४) वर्षा का वितरण समान नहीं है।

पश्चिमी राजस्थान के प्रदेश की गणना एशिया के उन क्षेत्रों में आ सकती है, जहाँ वर्षा नहीं होती हैं। वास्तव में ये प्रदेश एशिया के रहित भागों के निकट ही हैं। इस भाग में हिन्द महासागर से आने व दक्षिणी पश्चिमी मानसूनी हवाओं से कठिनता से औसत वर्षा ५ इन्च से ८ तक हो जाती है। इसका कारण यह है कि इन हवाओं की अधि- आर्द्रता मरुभूमि को पार करते समय नष्ट हो जाती है। पश्चिमी भाग में वे आबू में सबसे अधिक वर्षा होती है। सन् १८७५, १८८१, १८९२ १८९३ में आबू में प्रत्येक वर्ष १०० इन्च से भी अधिक वर्षा हुई थी।

---

[1] Basic Statistics 1957 P. 31

दक्षिणी राजस्थान वर्षा करने वाली हवाओं के रुख में है जिसके कारण । भाग में पर्याप्त वर्षा हो जाती है। दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में पूर्वी व श्चमी—दोनों ही हवाओं से अच्छी वर्षा हो जाती है। इस प्रकार दक्षिण गस्थान में बांसवाड़ा से झालावाड़ तथा कोटा तक के भागों में वर्षा केवल ट महासागर से आने वाली हवाओं जो नर्बदा व माही नदियों की घाटियों द ती हुई मालवा को पार करके आती हैं—से ही नहीं होती वरन् बंगाल की ाड़ी से आने वाली शेष हवाओं से भी होती है जो कभी कभी मेवाड़ तक ंच जाती हैं। इस भाग में यदि दक्षिणी—पश्चिमी मानसून शीघ्र समाप्त हो ते हैं तो दक्षिणी-पूर्वी मानसून से वर्षा हो जाती है।

इस प्रकार मेवाड़ के पहाड़ी क्षेत्र म हाड़ौती के पठार पर और अरावली ाड़ के पूर्वी ढालों पर अच्छी वर्षा हो जाती है। डूंगरपुर, बांसवाड़ा आदि पश्चिमी हवाओं से अच्छी वर्षा हो जाती है किन्तु दूर के उत्तर के भाग में र्षा होने के लिए हवाएं बहुत तेज एवं भरी हुई होनी चाहिए।

सरदी के दिनों में पश्चिम की ओर से आने वाले तूफानों से राजस्थान थोड़ी वर्षा होती है। दक्षिणी-राजस्थान को तो उसका उतना अंश प्राप्त नहीं ता जितना कि पश्चिमी व पूर्वी राजस्थान प्राप्त करते हैं। सर्दी के मौसम में र्षा की यह मात्रा केवल १–२ इन्च ही होती है किन्तु कृषि के लिए इसका शेष महत्व है क्योंकि रबी की फसल के लिए यह अत्यन्त लाभप्रद है, क्योंकि स समय गेहूँ, जौ और चना आदि खेतों में सिंचाई द्वारा तैयार किये जा रहे ते हैं। राजस्थान में इस वर्षा को 'मावट' कहते हैं।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि उत्तर व उत्तर पश्चिम में बीकानेर ौर जैसलमेर से दक्षिण में बांसवाड़ा और दक्षिण पूर्व में कोटा व झालावाड़ क वर्षा की मात्रा में शनैः शनैः लगभग ६ इन्च से ४० इन्च तक की वृद्धि ोती है किन्तु इस वृद्धि की गति अरावली को पार करने पर बहुत तेज हो ाती है।

कुछ भागों में वर्षा की मात्रा इस प्रकार है—

जैसलमेर ... ४ इन्च

बीकानेर	११ इन्च
जोधपुर .	१३ इन्च
उदयपुर ...	२६ इन्च
जयपुर	२६ इन्च
आबू पहाड़ .	६० इन्च

पूर्वी राजस्थान के तीन जिलों (भूतपूर्व रियासतों)—भरतपुर, ध और करौली में वर्षा २४ इन्च से २६ इन्च तक होती है, कोटा व झाला २० इन्च से ३० इन्च तक और बांसवाड़ा में ४० इन्च वर्षा होती है।

अभी तक राजस्थान में सबसे अधिक वर्षा सन् १८६३ में आ १३० इन्च हुई थी। सबसे कम वर्षा सन् १८६६ में जैसलमेर के पश्चिम में स्थित खाभा तथा रामगढ़ में हुई थी जबकि वहां १/१०० इन्च भी हुई थी[1]।

राजस्थान में बाढ़

राजस्थान में बाढ़ें नहीं आती हैं, क्योंकि वर्षा की मात्रा ही कम किन्तु जिस वर्ष बहुत ही अधिक वर्षा होती है उस वर्ष बाढ़ आ सकत उदाहरण के लिए सन् १८७५ में बनास नदी में भयंकर बाढ़ आई थी त वर्ष तत्कालीन टोंक का कस्बा सम्पूर्ण बह गया था। अनेक गांव और स भवन भी पानी में बह गये थे। पशु तथा जनहानि भी बहुत अधिक हुई थ

पहले बाणगंगा नदी में भी प्रायः बाढ़ आया करती थी किन्तु १८६५ में इस नदी को, तत्कालीन भरतपुर दरबार द्वारा सिंचाई के लिए नहरें व बांध बनवा कर, नियंत्रण में कर लिया है। इस नदी में सन् १ १८८४ और १८८५ में बाढ़ें आईं[2] जिनसे न केवल भरतपुर राज्य वरन् आगरा जिले में भी अत्यंत हानि हुई।

---

[1] Imperial Gazetteer p. 93

[2] वही

अध्याय : पांच

राजस्थान में सिंचाई

सुजला, सुफला शस्य श्यामला भारत भूमि में जहां गंगा, जमुना, गोदावरी पुत्र, कृष्णा, ताप्ती आदि अनेक वरदायिनी नदियाँ प्रवाहित होती हैं, यह कम मय की बात नहीं होगी कि हमारे देश में ऐसे भी अनेक प्रदेश हैं जहां पानी अभाव है, और सिंचाई के न होने के कारण भूमि प्यासी रह जाती है। राजस्थान ा ही एक प्रदेश है।

राजस्थान का क्षेत्रफल १,३२,३०० वर्गमील है। यह एक कृषि प्रधान य है जहां ८० प्रतिशत से भी अधिक जनसंख्या कृषि अथवा इससे संबंधित ों पर अवलंबित है। राजस्थान में कुल ३२ ३६ लाख एकड़[1] भूमि में चाई हो रही है जब कि यहां कुल कृषि योग्य भूमि ३६६ लाख एकड़ से भी धिक है, अर्थात् यहां केवल ९ प्रतिशत[2] भूमि में सिंचाई होती है। एक लेखक अनुसार, जब समस्त भारत में सिंचित कृषि भूमि २२ प्रतिशत है तो राजस्थान ६.७५ प्रतिशत सिंचित भूमि है। राज्य में वर्षा की कमी एवं उसमें भी अनि-श्चतता का तत्व विद्यमान होने के कारण सिंचाई की आवश्यकता एवं महत्व र भी बढ़ जाता है।

सिंचाई के प्रमुख साधन—राजस्थान में सिंचाई के तीन प्रमुख साधन —(१) कुएं, (२) तालाब, और, (३) बांध व नहरें।

(१) कुए—राजस्थान में प्रमुख सिंचाई का साधन कुएं हैं। राज्य में १.५५ लाख एकड़ भूमि में सिंचाई होती है जो कुल सिंचित क्षेत्र का ६०

---

[1]—Basic Statistics Rajasthan 1957 P 2

[2]—राजस्थान में सिंचाई विभाग ग्रन्थ १०-११, पेज १३

[3]—Basic Statistics P. 40

प्रतिशत[4] से कुछ ही अधिक है। राजस्थान में २,१५५[5] कुएँ हैं।

जिन भागों में कम गहराई (२० से ४० फीट) पर पानी उपलब्ध हो जाता है, वहा कुए अधिक लाभप्रद हैं। भरतपुर, अलवर, उदयपुर व जयपुर आदि क्षेत्र इसके लिए उपयुक्त हैं। किंतु जिन भागों में पानी बहुत गहराई पर मिलता है, जैसे जैसलमेर, बीकानेर व जोधपुर जहा अनेक भागों में ३०० फीट से ५०० फीट की गहराई पर पानी मिलता है, वहा कुओं द्वारा सिंचाई नहीं हो सकती। इन स्थानों में कुएँ केवल पीने का पानी प्राप्त करने के लिए ही उपयोग में लाये जाते हैं।

यदि पानी कम गहराई पर ही होता है, जैसे १५ फीट, तो ढेकली द्वारा अन्यथा रहँट अथवा चडस द्वारा बैलों की सहायता से पानी निकाला जाता है। कुछ कुओं से विद्युत अथवा तेल-चालित इंजिनों की सहायता से पानी निकालते हैं। विलियम स्टैम्पी की अध्यक्षता में जोधपुर सरकार ने १६३६-४० में जो कमेटी बिठाई थी उसकी रिपोर्ट[6] में पश्चिमी राजस्थान में 'लू' (तेज गरम हवा) को शक्ति की सहायता से कुओं से पानी निकालने का सुझाव दिया है। राज्य की द्वितीय पंच-वर्षीय योजना में सिंचाई के लिए ५० नल-कूप (Tube Well) बनाने की योजना है। जिसपर ३५ लाख रुपये व्यय होने का अनुमान है।

(२) तालाब—राजस्थान में तालाबों की संख्या ४४० है[7]। जलवायु और भूमि की बनावट ही तालाब के निर्माण को निर्धारित करती हैं। राजस्थान के केवल दक्षिणी, तथा दक्षिणी-पूर्वी भागों में ही तालाब पाये जाते हैं क्योंकि ये भाग अधिकांश पठारी हैं जिनमें अधिक दिन पानी ठहर सकता है। जोधपुर,

---

4—विकास अंक १ -११ पेज १७,

5—Basic Statistics

6—Report on the Proceedings & Findings by William Stampe P. 30 to 40

7—Basic Statistics Rajasthan 1957 P 40.

बीकानेर, शेखावाटी तथा जैसलमेर आदि मरुस्थली भागों में ऐसे तालाब नहीं बन पाते जिनमें पानी अधिक ठहर सके। राजस्थान में, सिंचाई की दृष्टि से, तालाबों का कोई विशेष महत्वशील स्थान नहीं है। सन् १९५०-५१ में तालाबों द्वारा ५ लाख एकड भूमि में सिंचाई होती थी, और १९५५-५६ में यह क्षेत्र ८ लाख एकड होगया।

(३) नहरें—राजस्थान की सभी नदिया (चम्बल नदी के अतिरिक्त) बरसाती नदियाँ हैं। अत इन नदियों के पानी को बाधों द्वारा रोक कर ही वर्ष पर्यन्त नहरों की सहायता से सिंचाई हो सकती है। राजस्थान में वर्ष भर बीकानेर डिवीजन में गग नहर द्वारा ही ६२५ एकड भूमि में सिंचाई होती है।

राजस्थान के निर्माण के पूर्व नदियों पर बाध आदि बनाने में दो प्रमुख कठिनाइया थीं। प्रथम, अधिकाश नदिया दो या अधिक राज्यों में होकर बहती थीं, अतः किसी भी नदी को बाधने में रा नैतिक कठिनाइया सामने आती थीं, और द्वितीय, अनेक छोटी छोटी रियासतों के पास बाध आदि बनाने के साधन उपलब्ध नहीं थे।

पचवर्षीय योजनाए और सिचाई—राजस्थान सरकार ने पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत छोटी बड़ी अनेक योजनाएं बनाई जिनसे इस राज्य में सिंचाई की सुविधाए बढ जावेंगी। प्रथम पचवर्षीय योजना में सिंचाई के कामों पर कुल २९.५४ रुपया व्यय करने की व्यवस्था की गई थी, किन्तु वास्तव में १९५१-५६ में ३१.१४ करोड रुपया व्यय हुआ था। इस अधिक व्यय का कारण भाखरा योजना के व्यय में वृद्धि होना था। इस योजना काल में सिंचाई का क्षेत्र १६.० लाख एकड होगया।

राज्य की द्वितीय पच-वर्षीय योजना में सिंचाई पर २४.५ करोड रुपया व्यय करने की व्यवस्था की गई है। यह गांधी, भाखरा, नागल व चबल योजनाओं के अतिरिक्त कुओं नहरों, तथा अन्य माध्यमिक व छोटी सिंचाई की योजनाओं पर व्यय की जा रही है। इस द्वितीय योजना में वर्तमान सिंचाई के क्षेत्रों को ३१.८० लाख एकड से बढाकर सन् १९६१ में ५२.२५ लाख एकड सिंचित भूमि तक बढा देने की व्यवस्था की गई है।

सिंचाई की प्रमुख बड़ी योजनाएं

वैसे तो राजस्थान में अनेक बड़ी योजनाओं पर कार्य हो रहा है किन्तु हम यहां चार प्रमुख योजनाओं का ही परिचय देंगे। ये योजनाएं ये हैं:— (१) भाखरा नांगल योजना, (२) चम्बल योजना, (३) जवाई योजना, और (४) राजस्थान नहर योजना।

(१) भाखरा नांगल योजना—यह बहुउद्देशीय योजना है किन्तु इसका मुख्य उद्देश्य विद्युत उत्पन्न करना तथा भूमि की सिंचाई करना है यह योजना पंजाब व राजस्थान सरकारें मिल कर बना रही हैं और इन दोनों सरकारों का क्रमश ८४ ८ प्रतिशत व १५ २ प्रतिशत भाग है। इस योजना पर १७३ ५४ करोड़ रुपया व्यय[1] होगा।

यह बांध सतलज नदी पर होशियारपुर जिले में भाखरा गांव के निकट बनाया जा रहा है। यह बांध ७४० फीट ऊंचा और १७०० फीट लम्बा है[2] भाखरा बांध से ८ मील नीचे नांगल बांध स्थित है। नांगल बांध तैयार हो चुका है। भाखरा बांध सन् १९५९-६० तक पूरा हो सकेगा। गंगवाल व कोटला, प्रत्येक स्थान पर एक एक विद्युत गृह बनाया जा चुका है।

राजस्थान को लाभ—इस योजना से राजस्थान की ५ ७० लाख एकड़ भूमि की सिंचाई हो सकेगी। इससे बीकानेर विभाग के गंगानगर जिले की भादरा, नौहर, सूरतगढ़, हनुमानगढ़, रायसिंहनगर, पदमपुर और गंगानगर की तहसीलों में सिंचाई हो सकेगी[3]। यह ध्यान रहे कि इस क्षेत्र का अधिकांश भाग बहुत कम वर्षा वाला प्रदेश है। इस योजना से खेतों तक पानी पहुँचाने के लिए एक हजार मील लम्बी नहरों का निर्माण किया जा चुका है[4]। इन

---

(1) 'Major Water & Power Projects of India." p 11 published by Government of India

(2) वही

(3) 'आयोजना', राजस्थान नहर सिंचाई विशेषांक, पृष्ठ ६

(4) 'विकास', राजस्थान सरकार द्वारा प्रकाशित, पृष्ठ ६

नहरों से सन् १९६० तक ५.७० लाख एकड भूमि में निरन्तर सिंचाई की सुविधा प्राप्त हो सकेगी।

राजस्थान को लगभग १५,००० किलोवाट जलविद्युत सन् १९६२ तक मिलने लगेगी। पहले गंगानगर व राजगढ (बीकानेर) को बिजली मिलेगी और यहां से ४१ नगरों व मार्ग के ग्रामीण क्षेत्रों में पहुंचाई जावेगी। बीकानेर और जयपुर के बिजलीघर क्रमशः रतनगढ और सीकर में बिजली प्राप्त कर सकेंगे। इससे तेल, सूती कपड़ा ऊनी कपडा, चीनी व खनिज उद्योगों को सहायता मिलेगी।

(२) चम्बल योजना—यदि राजस्थान के मानचित्र पर दृष्टि डाली जाय तो विदित होगा कि राज्य के बहुत बडे भाग को रेगिस्तान अपने अंचल से ढके हुए है। भूमि का बहुत बडा भाग बंजर पडा रहता है अतः वर्षाभाव से पीडित कृषक जनता की आवश्यकता की पूर्ति के लिए राजस्थान और मध्यप्रदेश की सरकारों ने राज्य की सबसे बडी नदी चम्बल को बांधने की संयुक्त योजना बनाई।

चंबल परिचय—चंबल नदी का प्राचीन पुराणोक्त नाम चर्मावती है। यह मध्यप्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश की सीमाओं पर बहती है। इस नदी की लम्बाई ६५० मील व अधिकतम चौड़ाई २,४०० फीट है। चौरासीगढ दुर्ग से नीचे कोटा शहर की ओर ६० मील के लगभग यह नदी पहाडी, सकडे तथा पथरीले मार्ग से प्रवाहित होती है।

योजना का आरम्भ—चंबल नदी से विद्युत-विकास का सर्वप्रथम विचार सन् १९४३ में जावर की खान में बिजली पहुँचाने के लिए कोटा के पास विद्युत उत्पादनार्थ एक बांध बनाए जाने के रूप में हुआ। सन् १९४५ तक यह विचार ३ बांध और विद्युत केन्द्रों की योजना में परिवर्द्धित होगया और सन् १९५० तक इसमें १२ लाख एकड भूमि की सिंचाई के लिए प्रस्तावित कोटा सिंचाई बांध और नहरों का निर्माण कार्य का भी समावेश होगया।

चंबल योजना—चंबल सिंचाई और जल-विद्युत योजना में बिजली उत्पादन केन्द्रों सहित ३ बांध और एक सिंचाई बांध का निर्माण-कार्य सम्मिलित है।

१ **गांधी सागर बाध**—ऐतिहासिक दुर्ग चौरासीगढ से ५ मील नीचे राजस्थान व उत्तरी मध्य-प्रदेश की सीमा पर, महात्मा गांधी के नाम पर, यह बाध बनाया जा रहा है यह बाध १,६७५ फीट लबा और २०० फीट ऊँचा होगा। इस बाध में लगभग ५७ लाख एकड़ फीट पानी एकत्रित हो सकेगा।

इसके जल-विद्युत-गृह से ६० हजार यूनिट जल-विद्युत उपलब्ध हो सकेगी। यह बाध व बिजलीघर १६५६-६० तक पूरा हो सकेगा।

२ **राणा प्रताप सागर बाध**—यह बाध कोटा से ३२ मील दूर चूलिया जल प्रपात के पास बनाया जा रहा है। यह बाध १२२½ फीट ऊँचा और ३,६२० फीट लम्बा। इस बाध में २३ ५ लाख एकड फीट पानी एकत्रित किया जा सकेगा। इस बाध से ८० हजार किलोवाट जल विद्युत उत्पन्न हो सकेगी।

३ **कोटा बांध**—यह तीसरा बाध कोटा नगर से १० मील दक्षिण में चबल की घाटी पर १४१ फीट ऊँचा और १,४४० फीट लबा बनाया जा रहा है। इसमें ७६० फीट चौडे जल-मार्ग रहेंगे। इस बाध से ६० हजार किलोवाट जल विद्युत उत्पन्न होगी।

कोटा बैरेज—कोटा नगर के निकट ही ६ मील की दूरी पर १८१० फीट लबा और ८३½ फीट ऊँचा बाध बनाया जा रहा है। इसमें बाढ का पानी निकालने के लिए १६ फाटक बनाए जावेंगे। इस बैरेज से १२ लाख एकड भूमि में सिंचाई होगी।

सभावित लाभ—इस योजना के पूरे हो जाने पर राजस्थान के कोटा, बूदी, सवाई माधोपुर, तथा भरतपुर जिलों में सिंचाई होगी।

इस योजना से दो लाख किलोवाट जल-विद्युत तैयार हो सकेगी। कोटा, लाखेरी, सवाई मोधोपुर, दौसा, जयपुर, साभर, अजमेर व्यावर तथा मार्ग में पडने वाले राज्य के अन्य ग्रामों में बिजली पहुंच जायेगी।

राजस्थान के औद्योगिक क्षेत्र के विकास की आशा भी बहुत अशों तक इस योजना पर ही आधारित है। लाखेरी और सवाई माधोपुर के सीमेन्ट के

कारखानों को सस्ती जल-विद्युत प्राप्त हो सकेगी। साभर झील के निकट नमक से कास्टिक सोडा व ब्लीचिंग पाउडर का कारखाना स्थापित करने पर विचार हो रहा है। खनिज पदार्थों को निकालने में भी सस्ती जल-विद्युत प्राप्त हो सकती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि कृषि सम्बन्धी तथा औद्योगिक आवश्यकताओं की श्रेष्ठतम अभिपूर्ति के उद्देश्य से चम्बल को अधिक उपयोगी बना देने के रूप में प्रकृति पर दृढ़तापूर्वक आक्रमण किया जा रहा है।

जवाई बांध

परिचय—जवाई नदी का उद्गम स्थान अरावली पर्वत के दक्षिणी-पश्चिमी ढील है। अपने उद्गम स्थान से लगभग १५ मील दूर बहने के पश्चात् यह नदी दो छोटी पहाड़ियों के मध्य में से गुजरती है। इस ही स्थान पर बांध का निर्माण किया गया है। यह बांध एरिनपुरा स्टेशन से लगभग १॥ मील की दूरी पर है। एरिनपुरा स्टेशन जोधपुर डिवीजन में दिल्ली-अहमदाबाद लाइन पर पश्चिमी रेलवे का एक छोटा सा स्टेशन है।

इस योजना का प्रस्ताव सन् १९०४५ में जोधपुर राज्य के इन्जीनियर होम ने किया गया था किन्तु अनेक आर्थिक एवं तान्त्रिक कठिनाइयों के कारण इस योजना पर कार्य आरम्भ न हो सका। इस योजना पर सन् १९४६ से कार्य आरम्भ किया गया। यह बहुउद्देशीय योजना नहीं है, इससे केवल सिंचाई ही हो सकेगी।

यह बांध बन कर पूरा हो चुका है। इस बांध की लम्बाई ३,०३० फीट व ऊंचाई ११४ फीट है। इस बांध की नींव ५० फीट गहरी है। बाढ़ के समय आने वाला फालतू पानी मुख्य बांध की चोटी के एक भाग पर १३ द्वारों में होकर निकाला जायगा। प्रत्येक द्वार १५ फीट ऊंचा व १४ फीट चौड़ा है और इसका फाटक इस्पात का है। मुख्य बांध के उत्तर और दक्षिण में दो सहायक बांध बनाए गये हैं जो क्रमश ७०० फीट और १६० फीट लम्बे हैं।

मुख्य बांध का क्षेत्रफल लगभग १० वर्ग मील है जिसमें ३०० वर्ग मील क्षेत्र का पानी एकत्रित होता है। बांध पूरा भर जाने पर कुल ७०,०००

लाख घन फीट पानी एकत्रित होता है जिसमें से ६५,००० घन फीट पानी सिंचाई के लिए उपलब्ध हो सकता है।

प्रस्तुत बाध से १४ मील लम्बी मुख्य नहर निकाली गई है। मुख्य नहर से ४ शाखाए और निकाली जावेंगी जो लगभग ८० मील लम्बी होंगी। जिस क्षेत्र में ये नहरें निकाली जा रही हैं, भूमि, अच्छी, ढालू और उपजाऊ है। अनुमान है कि ४६ हजार एकड़ भूमि में सिंचाई हो सकेगी। सिंचित होने वाली मुख्य फसलों में गेहू, चना, जौ मुख्य हैं। व्यावसायिक फसलों में कपास व गन्ना की फसलें मुख्य हैं।

राजस्थान नहर [1]

पृष्ठ भूमि—राजस्थान के उत्तरी एव पश्चिमी भाग में विशेषतः वर्षा का अभाव बना रहता है जिसके कारण इस क्षेत्र में प्रायः ऐसे अकाल पड़ा करते हैं, जो भारी सख्या में जन व पशुओं को नष्ट कर देते हैं।

विशेषत पूर्व बीकानेर व जैसलमेर राज्यों के क्षेत्र में स्थिति और भी गम्भीर है। वर्षा की कमी तथा जीवनयापन के साधनों के अभाव के कारण यह क्षेत्र बहुत ही कम आबाद है। भूतकाल में किसी समय घग्गर और हाकरा नदिया शिवालिक से निकल कर इस क्षेत्र में बहती हुई सिन्धु में गिरती थीं किन्तु भौगोलिक तथा अन्य कारणों से उन्होंने अपना मार्ग बदल लिया जिसके परिणामस्वरूप उनकी घाटियों में बसे कतिपय सम्पन्न नगर उजाड़ हो गये। पुरातात्विक अनुसधान तथा वर्तमान भग्नावशेषों से ज्ञात होता है कि किसी समय यह प्रदेश उन्नत सभ्यता का केन्द्र रहा है।

अग्रेजी शासकों ने इस क्षेत्र को उपेक्षित ही छोड दिया, बीकानेर दरबार ने १९२०-२८ में गग-नहर का निर्माण करवाया जिससे वह क्षेत्र हराभरा एव

---

[1]—सार्वजनिक सम्पर्क कार्यालय, जयपुर द्वारा प्रकाशित 'राजस्थान नहर परियोजना' तथा 'मरुस्थल से नन्दन वन की ओर' पुस्तिकाओं, 'आयोजना' राजस्थान नहर विशेषाक तथा टाइम्स ऑफ इन्डिया, राजस्थान कैनाल सप्लीमेंट के आधार पर।

सम्पन्न तथा सुसमृद्ध हैं। इससे ज्ञात होता है कि यह बहुत उपजाऊ क्षेत्र है और प्राचीन समृद्धि को लौटाने के लिए केवल जल की आवश्यकता है।

फरवरी १९५४ में विश्व बैंक ने भारत और पाकिस्तान के बीच नहरी पानी विवाद का निपटारा करने के लिए यह सिद्धान्त स्थिर किया कि सिन्धु, झेलम और चिनाब—तीनों पश्चिमी नदियों का सम्पूर्ण जल पाकिस्तान को उपलब्ध हो और रावी, व्यास और सतलज नामक तीनों पूर्वी नदियों का पानी भारत के उपयोग में आवे। विश्व बैंक का यह प्रस्ताव इस क्षेत्र के विकास के लिए चिनाब के अतिरिक्त पानी के उपयोग में बाधक बन गया और इसी कारण राजस्थान नहर परियोजना को स्थगित एवं संशोधित करना पड़ा।

राजस्थान नहर की वर्तमान योजना—राजस्थान निर्माण के ठीक ९ वर्ष के पश्चात् ३० मार्च १९५८ को राजस्थान की नवीन भाग्य रेखा-राजस्थान नहर का शिलान्यास केन्द्रीय गृह मन्त्री श्री गोविन्दवल्लभ पन्त द्वारा किया गया। यह केवल शिलान्यास ही नहीं था वरन् राजस्थान के दो करोड़ लोगों के जीवन में आर्थिक क्रांति की बुनियाद रखने का समारम्भ है।

राजस्थान नहर सतलज नदी पर व्यास के संगम से ठीक नीचे निर्मित हरीके बांध से निकाली जायगी। लगभग ११० मील की दूरी तक यह नहर सरहिंद फीडर के निकट बहती हुई पंजाब (भारत) में बहेगी। इस प्रकार प्रथम ११० मील तक यह स्वयं सिंचाई न कर केवल फीडर का काम करेगी। ११० मील पर यह राजस्थान की सीमा में प्रवेश करेगी और १३० मील तक पंजाब व राजस्थान की सीमा के निकट बहेगी। इसके पश्चात् यह सूरतगढ़ की तरफ मुड़ेगी और जैसलमेर की ओर दक्षिण-पश्चिम होती हुई ४२५ मील पर रामगढ़ (जैसलमेर) गांव के निकट समाप्त हो जावेगी।

इस नहर को पूरा होने में १० वर्ष लगेंगे किन्तु अनुमान है कि तीन वर्ष के बाद ही इसके द्वारा आने वाले पानी का उपयोग किया जा सकेगा। यह नहर विश्व की सबसे बड़ी नहर होगी। इस पर ६१ करोड़ रुपये से भी अधिक व्यय होने का अनुमान है। इसका कार्य इतना विशाल है कि इस नहर

पर २० हजार मनुष्य प्रति दिन के हिसाब से, बराबर १० वर्ष तक क
करते रहेंगे।

इस नहर के बन जाने पर लगभग ३३ ६ लाख एकड़ भूमि में निर
सिचाई की सुविधा प्रदान करना सभव होगा।

राजस्थान नहर का मुख्य प्रवाह क्षेत्र बीकानेर और जोधपुर डिवीजन
पश्चिमी भाग है जो पाकिस्तान की सीमा से लगा हुआ है। इस नहर से राजस्थ
में आया हुआ। थार का १/३ से अधिक रेतीला और निर्जल रेगिस्तानी भूम
सरसब्ज हो उठेगा। यह नहर बीकानेर डिवीजन के हनुमानगढ, सूरतगढ, अनूपग
रायसिंहनगर तथा बीकानेर तहसीलों की तथा जोधपुर डिवीजन में जैसल
जिले की नाचण, जैसलमेर तथा रामगढ तहसीलों की विस्तृत बजर भूमि
सिंचन करेगी।

इस प्रकार इस नहर के बन जाने से अनेक परिवारों का पुनर्वास
सकेगा तथा खाद्यान्न एव औद्योगिक फ़सलें बडी मात्रा में उपलब्ध हो सकेंगी।

हमारे विचार में, इस नहर को काडला बदरगाह से मिला देना अत
लाभदायक होगा क्योंकि नौकाओं आदि द्वारा काडला से और काडला को राजस्थ
से माल ढोया जा सकेगा जो अपेक्षाकृत सस्ता पड़ेगा और साथ ही रेलों पर
भी कुछ भार हल्का हो जावेगा।

अन्य योजनाएं

राजस्थान में उपरोक्त बड़ी योजनाओं के अतिरिक्त अन्य योजनाए
हैं जिनमें से कुछ पूरी हो चुकी हैं व कुछ पर कार्य हो रहा है। उनमें से कु
योजनाओं का वर्णन नीचे दे रहे हैं।

(१) **मोरेल बाध**—सवाई माधोपुर तहसील में लालसोट से लगा
१० मील दूर मोरेल नदी पर मिट्टी का एक बाध बनाया गया है। इस बाध
निर्माण कार्य पूरा हो चुका है और अब नहरें बनाई जा रही हैं। इस बाध प
४१ लाख रुपया व्यय हुआ है तथा २४ हजार एकड़ भूमि में सिंचाई होगी।

(२) गुढा योजना - बूंदी से लगभग १२ मील की दूरी पर मिट्टी का एक बांध बनाया जा रहा है। इससे प्रतिवर्ष लगभग ३७ हजार एकड़ भूमि में सिंचाई की जावेगी। इस पर लगभग ४२ ७५ लाख रुपया व्यय होगा।

(३) बांकली बाध—यह बाध अरावली पर्वत से निकलने वाली सुकड़ी नदी पर बनाया जा रहा है। यह नदी लूनी नदी की सहायक है। इस बाध से जालौर व पाली जिलों की भूमि में सिंचाई होगी।

(४) जग्गर बाध—हिंडौन के समीप जग्गर नदी पर मिट्टी का एक बांध बनाया गया है। इस बाध से ६,००० एकड़ भूमि में सिंचाई होगी।

(५) कालीसिल बाध—करौली प्रदेश में काली सिल नदी पर मिट्टी का बाध बनाया जारहा है। इस बांध से १४ हजार एकड भूमि पर सिंचाई होगी।

(६) पारवती बाध—धौलपुर से लगभग २० मील दूर पारवती नदी पर एक बांध बनाया जा रहा है। इससे लगभग २७ हजार एकड भूमि में सिंचाई होगी और ८७.१८ लाख रुपया व्यय होगा।

(७) मेजा बाध—भीलवाड़ा में मंडल के समीप कोठारी नदी पर एक बांध बनाया जा रहा है। इससे लगभग ३७ हजार एकड़ भूमि में सिंचाई होगी और ५६ लाख रुपये व्यय होंगे।

उपरोक्त के अतिरिक्त निम्न बाध भी बनाए जा रहे हैं।

(१) गम्भीरी योजना	चित्तौड़गढ	गम्भीरी नदी	३० हजार एकड़
(२) मरी योजना	चित्तौड़गढ	मरी नदी	१६॥ हजार एकड
(३) नमूना योजना	नाथद्वारा	बनास नदी	१३ हजार एकड़

अध्याय : छः

कृषि की उपज

राजस्थान विशाल राज्य है। वर्षा की दृष्टि से, प्रकृति को राजस्थान पर दयालु नहीं कहा जा सकता। फिर भी राजस्थान कृषि-प्रधान राज्य है क्योंकि यहा ८४ से ९० प्रतिशत लोग प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में इस व्यवसाय पर निर्भर हैं।

राजस्थान में २ ८३ करोड एकड़ [1] में खेती की जाती है व प्रति व्यक्ति खेती का क्षेत्र १ ७७ एकड [2] है राजस्थान की लगभग ३३ ५ प्रतिशत भूमि में ही कृषि होती है।

सिरोही, तथा लूनी व उसकी सहायक नदियों के निकटवर्ती उपजाऊ भागों के अतिरिक्त अरावली के पश्चिमी, उत्तरी और उत्तरी-पश्चिमी भाग, जिनमें प्रायः समस्त जैसलमेर, बीकानेर व अधिकाश जोधपुर के भाग सम्मिलित हैं, रेगिस्तानी क्षेत्र हैं। धरातल से पानी बहुत नीचे मिलता है, और सिंचाई के साधन नहीं हैं। लूनी नदी अपने साथ जो मिट्टी ले कर आती है वह कृषि के लिए बहुत अच्छी होती है जिसमें गेहू की खेती की जाती है। बीकानेर व जोधपुर के अधिकाश भागों में कृषि वर्षा पर ही निर्भर है। इन भागों में जो भी वर्षा होती है वह पानी भूमि में ही सूख जाता है और बहकर नहीं जाता है अतः यहा साधारण वर्षा से ही कृषि हो जाती है।

पूर्वी राजस्थान में वर्षा अपेक्षाकृत अधिक और नियमित होती है, प्रत्येक प्रकार की मिट्टी मिलती है, पानी धरातल के निकट है और कुए भी अनेक हैं, अनेक नदिया व नाले हैं। थोडे भाग के अतिरिक्त शेष भाग में वर्ष में दो फ़सले तैयार होजाती हैं।

---

[1]—Basic Statistics Rajasthan, 1957 P. 3

[2]—वही

दो फसलें—राजस्थान में दो फसलें काटी जाती हैं—खरीफ़ अथवा स्यालु और रबी अथवा उन्हालू। खरीफ़ की फसल बरसात के आरम्भ में बोई जाती है और सर्दी आरम्भ होने पर काट ली जाती है। मक्का, कपास, ज्वार बाजरा, तिल असली, मूंग, मोठ आदि प्रमुख उपज हैं। इस फसल के लिए अधिक पानी की आवश्यकता नहीं होती है। अतः उत्तरी-पश्चिमी राजस्थान की यह मुख्य फसल है। रबी की फसल सर्दी आरम्भ होते ही बो दी जाती है और गर्मी के आरम्भ होते ही काट ली जाती है। इस फसल की मुख्य उपज गेहूं, जौ, चना, जीरा, धनियां सरसों, मिर्चें, गन्ना, तम्बाकू, नील, आदि हैं।

दक्षिणी राजस्थान में एक विशेष प्रकार की कृषि प्रणाली दिखाई देती है। जिसे मुख्य भील लोग करते हैं। इस प्रणाली को 'वालर' अथवा 'वालरा' कहते हैं जो झूम' प्रणाली के समान होती है। इसमें जंगल के एक भाग को जला देते हैं और इस प्रकार साफ किए गये मैदान पर एक-दो वर्ष तक खेती करते हैं, बाद में इस भाग को छोड़ कर दूसरे भाग को साफ करके वहां खेती करते हैं। यह प्रणाली वनों के लिए अत्यंत हानिप्रद होने के कारण, सरकार द्वारा निषेध कर दिया है।

प्रमुख फसलें

१. गेहूं—यह राजस्थान में रबी की फ़सल है। राजस्थान के पूर्वी भागों, जयपुर, अलवर, भरतपुर, कोटा बूंदी आदि में गेहूं की खेती की जाती है। जोधपुर डिवीजन में लूनी नदी के निकटवर्ती भागों में गेहूं की खेती होती है। गंग-नहर बन जाने के पश्चात् बीकानेर के गंगानगर जिले में गेहूं की खेती अधिक मात्रा में व उच्च कोटि का होता है। गंगानगर को राजस्थान का 'खाद्य भंडार' कहते हैं। राजस्थान नहर बन जाने के पश्चात गेहूं की खेती का क्षेत्र बहुत बढ़ जावेगा। राजस्थान में गेहूं की प्रति एकड़ औसत उपज ८५२ पौंड है।

२. जौ—यह साधारण भूमि व कम पानी में भी उत्पन्न हो जाता है। अतः उत्तरी पश्चिमी राजस्थान को छोड़कर, सर्वत्र इसकी खेती होती है। राज्य में जौ की प्रति एकड़ औसत उपज १००८ पौंड है।

३ बाजरा—कृषि किए जाने वाले लगभग ३३ प्रतिशत भाग में बाजरे की खेती होती है। उत्पादन एव खाद्य-पदार्थ की दृष्टि से इसका महत्व-शील स्थान है। इसकी खेती वर्षा पर ही निर्भर है। अत: जिस वर्ष वर्षा अच्छी हो जाती है उस वर्ष बाजरे की पैदावार भी अच्छी हो जाती है। यह फसल तीन महीने में पक जाती है। इसकी खेती मुख्यत पश्चिमी और उत्तरी भागों में होती है। बीकानेर, चूरू, जोधपुर, झुंझुनू, सीकर, जयपुर, अलवर, भरतपुर, धौलपुर व करौली आदि में बाजरे की खेती होती है। राजस्थान में बाजरे की प्रति एकड औसत उपज १९५ पौंड है।

४ ज्वार—राजस्थान के कृषि लगभग ८ प्रतिशत भाग में ज्वार की खेती होती है। इसको अपेक्षाकृत अधिक पानी की आवश्यकता होती है। बूंदी, झालावाड, कोटा, टोंक, तथा प्रतापगढ एव उदयपुर के कुछ भागों में ज्वार की खेती मुख्यत होती है।

५ मक्का—राजस्थान में कृषि के लगभग ३ प्रतिशत भाग में मक्का की खेती होती है। इसके लिए अपेक्षाकृत अधिक पानी व उपजाऊ भूमि की आवश्यकता होती है। उदयपुर, कोटा, अलवर, जयपुर व टोंक आदि में इसकी खेती होती।

६ चावल—राजस्थान के अधिक वर्षा वाले कुछ भागो में चावल की भी खेती होती है। किन्तु यह चावल बढिया श्रेणी का नहीं होता है। कोटा, बूंदी, बांसवाडा व डूंगरपुर में इसकी खेती होती है।

७ दालें—राजस्थान के कृषि के लगभग ३० प्रतिशत भाग में दालें उत्पन्न की जाती हैं। चना, राजस्थान में रेगिस्तानी भाग को छोडकर सर्वत्र ही उत्पन्न होता है। अर्द्ध शुष्क भागों में सूखी खेती द्वारा चना उत्पन्न किया जाता है। गगानगर में चने की खेती सिचाई द्वारा होती है। मूंग, मोठ, अरहर व उडद की खेती भी राजस्थान के विभिन्न भागों में होती है।

८ कपास—भीलवाडा, चित्तौड़, कोटा, झालावाड, गगानगर आदि में कपास की खेती होती है। राज्य में कपास का उत्पादन प्रतिवर्ष बढता जा रहा है। अधिकाश कपास राज्य की सूती मीलों (भीलवाड़ा, अजमेर, किशनगढ, ब्यावर, जयपुर, पाली आदि में) काम आ जाती है, कुछ बाहर भेज देते हैं।

९. तिलहन—राजस्थान में तिलहन की खेती भी महत्वपूर्ण है। यहां कृषि के लगभग ६ प्रतिशत भाग में तिलहन का उत्पादन होता है। तिल की खेती शुष्क भागों में, जहां बाजरे की खेती होती है, हो सकती है। सरसों और राई (अलवर, भरतपुर, गगानगर) अलसी (उदयपुर, कोटा और टोंक); मूंगफली (जयपुर व कोटा जिले) आदि अन्य प्रमुख तिलहन हैं।

१०. गन्ना—इसकी खेती गगानगर, कोटा, उदयपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, टोंक और सवाई माधोपुर में होती है। गगानगर और उदयपुर जिलों का गन्ना वहां के शक्कर के कारखानों में काम आ जाता है। अधिकांश का गुड़ बनाया जाता है।

११ अफीम—इसकी खेती भारत सरकार के नियंत्रण में होती है। कोटा व उदयपुर जिलों के कुछ भागों में इसकी खेती होती है।

१२. मसाले—जीरा, धनिया, मिर्च आदि राज्य के अनेक भागों में उत्पन्न किया जाता है। जयपुर, उदयपुर व कोटा में जीरा, धनिया, मिर्च आदि विशेषरूप से होते हैं।

इनके अतिरिक्त साग-सब्जी, अनेक प्रकार के फल, आलू आदि भी उत्पन्न किए जाते हैं। बीकानेर के तरबूज, जोधपुर के अनार, टोंक, सामर व पाली का खरबूजा, उदयपुर की ककड़ी व पपीते प्रसिद्ध हैं।

प्रमुख फसलों की औसत प्रति एकड़ उपज[1]

१. गेहूँ	...	८४२ पौंड
२ जौ	..	१,००८ पौंड
३. बाजरा	..	१६५ पौंड
४. चावल	...	१,१४७ पौंड
५. चना		३५८ पौंड
६. मूंगफली	..	७५४ पौंड
७. गन्ना	...	१,५६१ पौंड
८. आलू		२,७३२ पौंड

[1] Basic Statistics 1957 p. 36

राज्य में कृषि में सुधार करने के लिए निम्नलिखित बातें सहायक होंगी-

(१) खाद का उचित प्रयोग, (२) अच्छे बीजों का प्रयोग, (३) परती भूमि को सुधारना, (४) भूमि का उचित वितरण, (५) सिंचाई के साधनों में वृद्धि करना, (६) कीड़ों व कीटाणुओं से रक्षा, (७) आधुनिक यन्त्रों का उपयोग, (८) पशुओं की नस्ल सुधार, (९) अनुसधान कार्यों का विकास, (१०) सहकारी सस्थाओं की स्थापना, (११) कृषि सम्बन्धी शिक्षा का प्रसार, (१२
को परामर्श आदि की व्यवस्था, (१३) फसल प्रतियोगिता आदि।

अध्याय : सात

पशुधन

पशु दो प्रकार के होते हैं-जंगली और पालतू। अब राजस्थान में जंगली पशु बहुत कम रह गये हैं क्योंकि अनेक भागों के जंगल साफ कर दिए गये हैं तथा अनेक का अनियंत्रित शिकार किया गया है। राजाओं के शिकारप्रेम के कारण अब भी अनेक भागों में जंगली पशु पाये जाते हैं। अरावली पर्वत एवं उसकी तलैटिया तथा हाड़ौती के पठारी भाग में जंगली पशुओं की अब भी प्रचुरता है। राजस्थान में पाये जाने वाले प्रमुख जंगली पशु निम्नलिखित हैं।

१. शेर—मुख्यत डूंगरपुर, झालावाड़, प्रतापगढ, सिरोही, कोटा, बूंदी उदयपुर, चित्तौड़गढ, सवाई माधोपुर, करौली, भरतपुर, धौलपुर, अलवर के जंगलों में पाये जाते हैं।

२. चीते—सवाई माधोपुर, किशनगढ, करौली, भरतपुर, धौलपुर, अलवर, बूंदी, कोटा, जोधपुर, उदयपुर, चित्तौड़गढ, डूंगरपुर, व झालावाड़ में मुख्यत. पाये जाते हैं।

३. रीछ—कोटा, बूंदी, सवाई माधोपुर, जोधपुर, उदयपुर, डूंगरपुर, अलवर, भरतपुर, करौली व धौलपुर में मुख्यत. पाये जाते हैं।

४. सुअर—सवाई माधोपुर, टोंक, भरतपुर, धौलपुर, कोटा, अलवर, बीकानेर, जोधपुर और उदयपुर में मुख्यतः पाये जाते हैं।

५. हिरन—प्रायः सर्वत्र पाये जाते हैं किन्तु किशनगढ, टोंक, अलवर, उदयपुर, जोधपुर व कोटा उल्लेखनीय हैं।

६. नील गाय—किशनगढ, करौली भरतपुर, धौलपुर, जोधपुर, कोटा व झालावाड़ उल्लेखनीय हैं।

७. खरगोश—सवाई माधोपुर, कोटा, बूंदी, उदयपुर, अलवर, भरतपुर व करौली उल्लेखनीय हैं।

पालतू पशु

राजस्थान की पशु सख्या भारत के अधिकतर राज्यों और विश्व के अधिकतर देशों से अधिक है। स्थूल रूप से राजस्थान राज्य में, सन् १९५१ की पशुगणना के अनुसार, भारत के कुल पशु का लगभग ८'८ प्रतिशत भाग पाया जाता है जो नीचे की तालिका से स्पष्ट है—

पशु	भारत[1] (लाखों में)	राजस्थान[2] (लाखों में)	राजस्थान में भारत का प्रतिशत
गाय-बैल	१९५०	१४५	७४
भेड़-बकरी	८८६	१०५	११५
अन्य	७९	७	८८
	२९१५	२५७	८८

प्रमुख पालतू पशुओं को तीन भागों में विभक्त करके अध्ययन करेंगे—(१) दूध देने वाले पशु, (२) बोझा ढोने और सवारी के काम आने वाले पशु, और (३) मास और ऊन देने वाले पशु।

१. दूध देने वाले पशु

गाय—भारत की समस्त गायों का लगभग ८ प्रतिशत भाग राजस्थान में पाया जाता है। सख्या के अतिरिक्त श्रेष्ठता की दृष्टि से भी राजस्थान की गायें—विशेषतः रेतीले भाग की गायें, जो पाच सेर से दस सेर तक दूध देती हैं—ऊँचा स्थान रखती हैं। जोधपुर डिवीजन में मलानी और साचौर, तथा बीकानेर डिवीजन में पूगल तहसीलों की गायें बहुत अच्छी मानी जाती हैं।

1—'India 1953', P. 251

2—Agricultural Statistics (1950-51) P 37-40

भैंस—सन् १९५६ की पशु गणना के अनुसार राजस्थान में ३४·३६ लाख [३] भैंसें थी। ये प्राय प्रत्येक भाग में पाई जाती हैं। शुष्क भागों-जैसलमेर, बीकानेर आदि में बहुत ही कम भैंसे मिलती हैं।

२ सवारी व बोझा ढोने वाले पशु

बैल—मध्य तथा पूर्वी राजस्थान में बैल मुख्यत: पाये जाते हैं। जोधपुर डिवीजन के नागौर जिले के 'नागौरी बैल' उत्तर-भारत में अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। प्रमुख पशु-मेलों में उनका क्रय विक्रय बड़ी सख्या में होता है। ये बैल सुन्दर, मजबूत बड़े व ताकतवर होते हैं। सन् १९५६ की पशु गणना के अनुसार राजस्थान में ३५·७८ लाख बैल हैं।

ऊंट—रेगिस्तान का सबसे महत्वशील पशु ऊंट है जो 'रेगिस्तान का जहाज' भी कहलाता है। ऊंट सवारी करने, बोझा ढोने, पानी खीचने, खेत जोतने, गाड़ी खींचने के काम आता है। ऊंट का दूध दवा के रूप में व कुछ लोगों के लिए साधारणरूप में पीने के काम आता है। इसके बालों से नम्दे, डोरिया आदि बनाए जाते हैं। ऊंट की खाल के बड़े-बडे कुप्पे बनाए जाते हैं जो तेल या घी भरने के काम में आते है। भारत में सवारी के लिए श्रेष्ठ ऊंट राजस्थान में ही पाये जाते हैं जो कि आवश्यकता पड़ने पर एक रात में ८० से १०० मील तक चल लेते हैं। जैसलमेर, बीकानेर व जोधपुर के ऊंट प्रसिद्ध हैं। जैसलमेर के ऊंट साधारण ऊंटों से छोटे और सुन्दर सिर व गर्दन वाले होते हैं। जोधपुर व बीकानेर के ऊंट जैसलमेरी ऊंटों से अपेक्षाकृत बडे मजबूत तथा प्राय: अधिक तेज चलने वाले होते हैं। सन् १९५६ की पशु-गणना के अनुसार राजस्थान में ४,३६,२४० ऊंट हैं।

घोड़ा—यह सवारी और गाड़ी खींचने के काम आता है। जोधपुर डिवीजन में मलानी और नागौर के घोड़े प्रसिद्ध हैं। सन् १९५६ में राजस्थान में १·१३ लाख घोड़े हैं।

---

[३]—Basic Statistics Rajasthan 1957 Published by Directorate of Economics & Statistics, Rajasthan, P. 38.

गधा—यह बोझा ढोने के काम में आता है व इसे साधारण भोजन व
आवश्यकता होती है। गधे राजस्थान के प्राय प्रत्येक भाग में पाये जाते हैं
सन् १६५६ की पशु गणना के अनुसार राजस्थान में १ ६० लाख गधे हैं।

३ मांस व ऊन देने वाले पशु

इस वर्ग में बकरी व भेड़ मुख्य हैं। भेड़ व ऊन का विस्तृत विवरण
आगे के अध्याय में दिया गया है। यहा केवल बकरी का संक्षिप्त विवरण देंगे

बकरी—सन् १६५१ की पशु गणना के अनुसार राजस्थान में कु
५५,४३,६७४ बकरे व बकरिया [1] थी और १६५६ की पशु गणना के अनुस
यहां इनकी सख्या ८७,३० १६३ है [2]। बकरियों के लिए भी शुष्क जलवा
अनुकूल होती है, इस कारण राजस्थान के शुष्क भागों में भेड़ व बकरिया दो
ही पाली जाती हैं। बकरिया काटेदार झाड़िया; सूखे पत्ते व छोटी छोटी घा
बडी रुचि से खाती हैं, अत बकरी-पालन में व्यय कम होता है। राजस्थान
बकरिया मुख्यत पश्चिम और उत्तरी राजस्थान में पाई जाती हैं।

राजस्थान में मासाहारी लोग अधिकतर बकरे का मास ही काम में ले
हैं। राजस्थान के बड़े नगरों में गाँवों से बकरे मास के लिए मगाये जाते हैं
इसके अतिरिक्त राजस्थान से बकरे बाहर भी, मुख्यत' बम्बई, अहमदाबाद
देहली को भेजे जाते हैं।

बकरियों के बालों मे नम्दे व कम्बल आदि भी बनाते हैं। चमड़े
अन्य वस्तुए बनाई जाती हैं।

पशु मेले

पशुओं के क्रय-विक्रय को सुगम बनाने के लिए राजस्थान के विभिन्न
भागों में पशु मेलों का आयोजन होता है जिनमें अच्छी नस्लों के ऊट, भेड़
बकरियां, गाय, बैल आदि पशुओं का क्रय-विक्रय होता है।

1—Statistical Outline of Rajasthan, Jan 1953, p. 22
2—Basic Statistics Rajasthan 1957 p 37

जोधपुर डिवीजन में बालोत्रा के निकट तिलवाड़ा में (प्राय: मार्च के महीने में) पशु मेला लगता है जिसमें मुख्यत. ऊंटों का क्रय-विक्रय होता है। जोधपुर डिवीजन में ही नागौर और परबतसर में भी पशु-मेले लगते हैं। नागौर के मेले में मुख्यत बैल, और परबतसर के मेले में बैल, ऊंट व घोड़े आदि का मुख्यत. क्रय-विक्रय होता है। अक्टूबर-नवम्बर में पुष्कर (अजमेर के निकट) में भी पशु-मेला लगता है। अलवर, भरतपुर (दशहरे पर) धौलपुर व इन्द्रगढ में भी पशु-मेले लगते हैं। इनके अतिरिक्त ऊंट व पशुओं के अन्य छोटे मेले बीकानेर के अनेक स्थानों में लगते हैं।

अध्याय : आठ

पशुधन (क्रमशः)

(राजस्थान में भेड़ व ऊन[1])

भारत के ऊन उत्पादक राज्यों में राजस्थान का प्रमुख स्थान रहा है देश में होने वाले ऊन उत्पादन का लगभग ३३ प्रतिशत भाग इस राज्य । प्रति वर्ष होता है । सन् १९५६ के सरकारी आंकड़ों[2] के अनुसार राजस्थान । ७३ ७५ लाख भेड़ें हैं । इस संख्या को देखते हुए तथा सन् १९५१ की भे गणना के उपलब्ध आंकड़ों से तुलना करने पर ज्ञात होगा कि भेड़ों की संख्या में लगभग ३४ प्रतिशत की वृद्धि हुई है । अनुमान है कि भारत की कुल भे का लगभग २० प्रतिशत भाग राजस्थान में ही है । राजस्थान में आज क लगभग २८० लाख पौंड ऊन का प्रति वर्ष उत्पादन हो रहा है ।

अर्थव्यवस्था में महत्त्व—अनुमान है कि राजस्थान से प्रतिवर्ष ३½ ४ करोड़ रुपयों की ऊन विदेशों को निर्यात की जाती है जिसमें से एक बड़ा भा दुर्लभ-मुद्र क्षेत्र को जाता है । इस प्रकार विदेशी मुद्रा अर्जन में ऊन का महत्त्वपूर्ण योग है । कुछ ऊन भारत के ऊनी-उद्योग केन्द्रों को भेज दी जाती और शेष राजस्थान में ही कुटीर उद्योगों में काम में ले ली जाती है ।

भेड़ों से ऊन के अतिरिक्त अन्य वस्तुएँ भी प्राप्त होती हैं । भेड़ों दूध व मांस भी मिलता है । लाखों भेड़ें प्रतिवर्ष उत्तर-प्रदेश, देहली, अहम दाबाद, बम्बई को मांसके लिए भेज देते हैं । अनुमान है कि राजस्थान में प्रतिवर्ष १० लाख भेड़ें मांस के लिए मारी जाती हैं ।

---

[1] प्रस्तुत अध्याय में भेड़ व ऊन उन्नति विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा प्रकाशित राजस्थान में भेड़ व ऊन उन्नति' पुस्तिका से सामग्री स्वतन्त्रतापूर्वक ली गई है । लेखक विभाग के आभारी हैं ।

[2] Basic Statistics Rajasthan, 197 p

भेड़ों से अन्य लाभप्रद पदार्थ भी मिलते हैं । इनकी मींगनियाँ और मूत्र श्रेष्ठ खाद होती हैं । इसी कारण भेड़े चर चुकने के पश्चात् रात में किसान अपने खेतों में बिठा लेते हैं व इसके लिए चरवाहों को कुछ रुपये भी दे देते हैं । भेड़ों की आंतों से तल्ले, स्नायु से सरेस और चर्बी से बूट-पॉलिश, ग्रीज आदि बनाते हैं । भेड़ों की हड्डियों से श्रेष्ठ खाद भी बनाई जाती है ।

राजस्थान के रेतीले एवं पहाडी भाग में जहाँ खेती नहीं की जा सकती है, वहाँ भेड़े चराकर भूमि का उपयोग कर लेते हैं । इसके अतिरिक्त इन भागों में भेंडे पालकर लोग अपना निर्वाह कर लेते हैं । कृषि वाले क्षेत्रों में भी कृषक भेड़े पालते हैं, और इस प्रकार यह एक सहायक उद्योग का रूप ले लेता है । राजस्थान में सम्पूर्ण जोधपुर व बीकानेर डिवीजन तथा जयपुर डिवीजन के कुछ भाग में मुख्य व्यवसाय भेड़-पोषण ही है । इस कारण भेड़ सम्बन्धी अन्य व्यवसाय जैसे ऊन कटाई, सफाई, कताई, बुनाई तथा अन्य ऊनी कुटीर उद्योग यहां के मुख्य अङ्ग बन गये हैं । व्यापारिक-क्षेत्र में भी ऊन का व्यापार भी इन भागों में मुख्य है । अनुमान है कि राजस्थान में लगभग दस लाख व्यक्तियों[1] का निर्वाह भेड़-पालन से होता है अतः स्पष्ट है कि राजस्थान की अर्थ व्यवस्था में इनका बहुत महत्व है ।

भेड़ क्षेत्र—यदि राजस्थान के उत्तर पूर्व से लेकर दक्षिण-पश्चिम तक एक रेखा खींची जाय (अर्थात् झुंझुनूं जिले के उत्तरी भाग से जालौर की पश्चिमी सीमा तक) तो ज्ञात होगा कि इस रेखा पर (यह चूरू, बीकानेर, नागौर, जोधपुर, पाली, बाड़मेर व जालौर के क्षेत्रों में होती हुई जावेगी) तथा निकटवर्ती भागों में ही राजस्थान की भेड़ों का मुख्य क्षेत्र है । इस भाग में वार्षिक वर्षा का औसत १५ इंच से २६ इंच तक रहता है । यहाँ प्रति वर्ग मील के क्षेत्र में भेड़ों की संख्या ५६ से १०२ तक पाई जाती है ।

इस क्षेत्र (अथवा इस रेखा) के उत्तरी भाग में वर्षा की कमी के कारण भेड़ों की संख्या भी कम है । इस क्षेत्र का अधिकांश भाग मरुस्थली है और औसत वार्षिक वर्षा भी १० इंच से कम है । इस क्षेत्र में प्रति वर्ग मील में १५ से २० भेड़े ही मिलती हैं ।

1—'राजस्थान में भेड़ व ऊन उन्नति', राजस्थान सरकार द्वारा प्रकाशित, पृष्ठ १

प्रति भेड़ प्रतिवर्ष १।। से २ पौंड तक ऊन देती है। इस जाति की राज्य में लगभग ६ लाख भेडे हैं।

(८) बागड़ी—ये भेडे अलवर में पाई जाती हैं। इनमें अधिकांश (प्राय ७५ प्रतिशत) काले मुह की होती हैं और शेष सफेद मुह वाली। इनके कान छोटे व ऊन भी छोटे रेशे वाली होती है। इनकी सख्या लगभग ८ लाख है।

भेड़ पालन और ऊन उद्योग के दोष

यद्यपि भेडों व ऊन प्राप्ति की मात्रा की दृष्टि से राजस्थान का भारत में महत्वशील स्थान है किन्तु यह व्यवसाय उन्नत दशा में नहीं है। नीचे इस व्यवसाय के प्रमुख दोष एव उनके निवारण क लिये कुछ उपाय बतलाए गए हैं।

(१) नस्ल सुधार—राजस्थान में भेडों की नस्ल बहुत बिगड़ गई है क्योंकि भेड़ों के मालिक भेडों को चराने का काम वेतन-भोगी श्रमिकों से लेते हैं अत ये लोग भेड़ों की नस्ल सुधारने में विशेष प्रयत्नशील दिखाई नही देते हैं। इसके अतिरिक्त प्रजनन के लिए अच्छे नरों का चुनाव नही किया जाता है

(२) उत्तम चरागाहों की कमी—राजस्थान में उत्तम चरागाहों की कमी होने के कारण भेड चराने-वालों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहना पडता है। इसलिए इनको सगठित करने में असुविधा है।

(३) रोग आदि—भेड़ों में रोग आदि फैल जाते हैं जिनसे सैंकड़ भेडे अल्प काल में ही मर जाती हैं। चरवाहे रोगग्रसित भेडों की देखभाल रोगों को रोकने के प्रयत्न पूर्णत नहीं कर पाते हैं।

(४) खराब आर्थिक दशा—भेड चराने वालों की आर्थिक दश अत्यन्त खराब है। अत उनकी कार्य क्षमता में कमी आती ह। उनका ध्या अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धन एकत्रित करने की ओ अधिक रहता है और भेड़ पोषण तथा इनकी उन्नति की ओर कम।

की पूर्ति नहीं कर पाते हैं तथा सरकारी केन्द्र होने के कारण लालफीताशाही व अन्य असुविधाओं का सामना करना पडता है।

(६) दोषपूर्ण विक्रय प्रणाली—राजस्थान में ऊन के विक्रय का अत्यन्त दोषपूर्ण ढग है। ऊन का श्रेणीकरण नहीं किया जाता है, मध्यजन प्रचुर सख्या में होते हैं, ऊन में मिलावट कर दी जाती है, ऊन के निर्यात की प्रणाली दोषपूर्ण है। इन सब कारणों से ऊन उद्योग प्रगति नहीं कर पाया है।

(७) सरकारी प्रोत्साहन की कमी—अभी तक सरकार की ऊन उद्योग के प्रति उदासीन नीति रही थी। ऊन कातने, बुनने रगने आदि के कारखानो को सरकार ने प्रोत्साहन नही दिया। प्रशिक्षण की ओर भी सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया था। किन्तु अब सरकार इसकी ओर सजग प्रतीत होती है।

(८) अवैज्ञानिक तरीके—ऊन काटने व उद्योग में अवैज्ञानिक तरीके काम में लिए जाते हैं। ऊन को कैंची से काटते हैं जिससे बहुत सी ऊन बेकार चली जाती है, कुछ उड जाती है।

(६) सहकारिता का अभाव—भेडे चराने वाले व ऊन विक्रेताओं की सहकारी सस्थाए नहीं हैं अत उन्हें सगठित होने तथा उनकी समस्याओं को हल करने के लिए कोई प्रयत्न सफल नहीं हो पाते अत इनमें सहकारिता की भावना जाग्रत करने की आवश्यकता है।

भेड व ऊन का व्यापार

राजस्थान में लगभग प्रतिवर्ष दो सौ अस्सी लाख (२८०) पौंड ऊन कटकर बिक जाती है। आज भी राज्य के सभी भागों में ग्रामीण भेडपालक प्राचीन परम्परा से चली आ रही, कैंचियों की सहायता से ऊन काटकर बिना श्रेणीकरण किये हुए गांवों के अथवा शहरों में रहने वाले ऊन के व्यापारी के दलालों के हाथों बेच देते हैं। इन लोगों का विक्रय भी उसी प्राचीन परम्परा के अनुसार होता है। या तो ऊन को तौल कर बेचते हैं अथवा भेडों की सख्या के अनुसार बेच देते हैं। इस प्रकार २–३ छोटे छोटे व्यापारियों के हाथों से निकलने के बाद बहुत सा ऊन बड़ी मडियों तक पहुँचता है राजस्थान की मुख्य ऊनी मडियां ब्यावर, पाली, बीकानेर व केकडी हैं। इन मण्डियों में पहुँचने के

प्रत्येक भाग के लिए एक-एक भेड व ऊन विकास अधीक्षक के नियंत्रण में एक-एक मुख्य विकास केन्द्र स्थापित किया गया है। प्रत्येक मुख्य विकास केन्द्र के अन्तगत दस–दस विकास केन्द्र [1] खोले गये हैं।

भेड व ऊन प्रदर्शनियां व प्रतियोगिताए—सरकार की ओर से भेड़ ऊन प्रदर्शनियों व प्रतियोगिताओं का आयोजन भी सन् १९५० से प्रतिवर्ष राज्य के विभिन्न भागों में किया जा रहा है। इन प्रदर्शनियों व प्रतियोगिताओं के माध्यम से ग्रामीण भेड़–पालकों को आधुनिक भेड़–पोषण की विधियों के साथ ही ऊन वर्गीकरण की प्रणालियां व महत्व, ऊन कटाई व कताई, बीमारियों की रोक–थाम के विषय में बतलाया जाता है। इनका आयोजन ३–४ दिन तक मुख्यत ऊन व भेड़ उत्पादक क्षेत्रों में किया जाता है।

अभी तक इन स्थानों पर ऐसी प्रदर्शनियों व प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा चुका है —

जयपुर क्षेत्र में झुंझनू, सीकर, जैरामपुरा, रामपुरा, **जोधपुर क्षेत्र में** बिलाड़ा और बाली, **बीकानेर क्षेत्र में** कोलायत, रिड़मलसर और नोखा।

विकास सेवा खंड में भेड़ व ऊन उन्नति-कार्य—सन् १९५५–५६ में राष्ट्रीय विकास सेवा खंडो में भेड़ व ऊन की उन्नति की योजना की स्वीकृति दी। डीडवाना, सुमेरपुर, हिंडौन, साकडा और रायसिंहनगर में विकास कार्य हो रहा है। सुमेरपुर में सहकारी ऊन काटने का केन्द्र स्थापित कर दिया गया है।

---

[1]— इनके नाम ये हैं–(१) मुख्य विकास केन्द्र जयपुर- इसके अंतर्गत दस विकास केन्द्र इन स्थानों पर हैं—साभर, मालपुरा, निवाई, जयपुर, दौसा, अजीतगढ, सवाई माधोपुर, सीकर, नवलगढ और झुंझुनू। (२) मुख्य विकास केन्द्र बीकानेर—सूरतगढ, हनुमानगढ, महाजन, भादरा, राजगढ, बीकानेर, कोलायत, नोखा, डूंगरगढ, और सुजानगढ। (३) मुख्य विकास केन्द्र जोधपुर (उत्तरी भाग- जैसलमेर–के लिए)—रामगढ, जैसलमेर, डेहासर, लाठी, पोकरण, मोहनगढ, फलौदी, शिव और भाद। (४) मुख्य विकास केन्द्र जोधपुर (दक्षिणी भाग–जोधपुर के लिए)—बाड़मेर, बालोतरा, जालोर, बाली, पाली, बिलाडा, जोधपुर, ओसिया, परबतसर, मेड़ता सिटी और नागोर।

उपरान्त कांटा निकाला जाता है तथा ऊन का वर्गीकरण किया जाता है। उनके पश्चात ३२० पौंड की गांठे बंधवाकर निर्यात होता है। राजस्थान की मण्डियों के अतिरिक्त कुछ कच्चा माल फाजलका, पानीपत, देहली तथा राजकोट की मण्डियों में भी पहुँचता है। इन मण्डियों से निकलने के उपरान्त निर्यात अधिकार व्यापारियों की सहायता से यह माल लिवरपूल, संयुक्त राज्य, कनाडा, आस्ट्रेलिया और रूस को निर्यात किया जाता है। निर्यात के अतिरिक्त कुछ माल भारतीय ऊनी मीलों, कालीन व नमदों के उत्पादन केन्द्रों तथा हाथ करघा ऊनी उद्योग केन्द्रों द्वारा खरीद लिया जाता है।

इस राज्य का ऊन विदेशों में पहुँचकर मुख्यरूप से बीकानेर, राजस्थानी, ब्यावर, मारवाडी व जैसलमेरी तथा जोरिया के नाम से ही नीलाम होता है। इस प्रकार १८० लाख पौंड ऊन राजस्थान से भारत में व अन्य स्थानों तथा विदेशों को भेज दिया जाता है।

ऊन की अपेक्षा राजस्थान में लगभग १५ लाख भेड़ों की खपत मांस के लिए हो जाती है, परन्तु इसके अतिरिक्त भी ४-५ लाख भेड़ प्रतिवर्ष दिल्ली, उत्तर प्रदेश तथा बम्बई के व्यापारियों के हाथों मांस के लिए बेची जाती हैं। इस प्रकार राजस्थान को भेड़ व ऊन के निर्यात से करीब ७ करोड़ रुपये की आय प्रति वर्ष होती है।

सरकार का योग

सरकार ने राज्य में भेड़ व ऊन का आर्थिक महत्व समझा और सरकार भी अब इनके विकास के लिए प्रयत्नशील है। सरकार ने भेड़ व ऊन उन्नति विभाग बीकानेर में स्थापित किया है। जयपुर में डायरेक्टर का कार्यालय है।

प्रजनन केन्द्र व विकास केन्द्र—सरकार ने इन स्थानों पर भेड़ प्रजनन केन्द्र स्थापित किये हैं—बीकानेर, जोधपुर, जैसलमेर। इन केन्द्रों में अच्छे किस्म के नर-भेड़ रखे जाते हैं।

राजस्थान के विभिन्न भागों में विकास केन्द्रों का एक जाल सा बिछा दिया गया है। राजस्थान में ऊन विकास के लिए सम्पूर्ण राज्य को चार भागों में विभाजित कर देने के उपरान्त जयपुर, जोधपुर, बीकानेर व जैसलमेर में क्रमशः

इनके अतिरिक्त अब तक २० सहकारी-भेड़-पोषण समितिया इन क्षेत्रों में स्थापित की जा चुकी हैं।

शिक्षण केन्द्र—भेड़ों के शारीरिक विज्ञान ऊन वर्गीकरण तथा प्राथमिक चिकित्सा आदि अनेक बातों सबधी शिक्षा देने के लिए सरकारी शिक्षण केन्द्रों की स्थापना करने की योजना है। ऐसी शिक्षण सस्था जयपुर में स्थापित (सन् १९५४ में) की जा चुकी है।

बुनकरों को हाथ करघा निर्मित कपड़ों का मशीनों द्वारा सस्ते व सुन्दर ढग से परिरूपण कराने की सुविधा देने के उद्देश्य से बीकानेर में ऊन कताई एव परिरूपण केन्द्र स्थापित किया जा चुका है।

अन्तर्राष्ट्रीय खाद्य व कृषि सस्था का योग--राजस्थान सरकार की प्रार्थना पर सयुक्त राष्ट्र सघ ने अन्तर्राष्ट्रीय खाद्य व कृषि सस्था के दो विशेषज्ञों [1] की नियुक्ति इस विकास कार्य के लिए सहायता के रूप में की। इन दोनों ने इसके विकास के सबध में अपनी रिपोर्ट राजस्थान सरकार को दी थी। द्वितीय पच-वर्षीय योजना के अतर्गत इन्हीं के आधार पर कार्य किये जा रहे हैं।

कोलबो योजना का योग--कोलबो योजना के अतर्गत विभाग के दो कर्मचारियों को आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड में भेड व ऊन विकास तथा अनुसधान सबधी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेजा है।

केन्द्रीय सरकार का योग--पशु पालन केन्द्र हिसार, भेड व ऊन अनुसधान केन्द्र पूना आदि में शिक्षा प्राप्त करने के लिए क्रमश दो और पाच कर्मचारियों को भेजा था।

1— इन विशेषज्ञों में एक तो सिडनी यूनीवर्सिटी आफ टैक्नोलौजी के प्रोफेसर डा० पी० आर० मेकमोहन थे और दूसरे हालैंड के ऊनी ग्रामोद्योग विशेषज्ञ थे।

अध्याय : नौ

राजस्थान में विद्युत-विकास

महत्व—वर्तमान सामाजिक एव आर्थिक जीवन में विद्युत शक्ति का स्थान महत्वशील है। आधुनिक उद्योग धन्धों के लिए विद्युत-शक्ति का उपयोग अनिवार्य है। कृषि फार्मों एव गांवों के नवनिर्माण की दिशा में विद्युत की व्यापक उपयोगिताएं हैं। आज के चिकित्सा-विज्ञान में भी विद्युत की सहायता अनिर्वचनीय है। वर्तमान युग में अनेक कार्य बिजली की सहायता से अपेक्षाकृत अधिक-शीघ्र, अधिक तेजी से तथा कम खर्च पर किए जा सकते हैं। दो शब्दों में यदि इस युग को 'विद्युत-युग' कहा जाय तो अनुपयुक्त न होगा।

विद्युत-शक्ति का विकास किसी भी देश की उन्नति के लिए महान् आवश्यकता ही नहीं, वरन् प्राणप्द जीवन स्रोत है। किसी भी राज्य में बिजली के विकास को वहा की जनता के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने और आर्थिक विकास का द्वार खोलने के लिए कुंजी कहा जा सकता है।

प्राकृतिक साधनों से भरपूर होने हुए भी अनेक दिशाओं में पिछड़े हुए राजस्थान में, विद्युत-शक्ति के विकास का प्रश्न अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

राजमी से सार्वजनिक हित की ओर

राजस्थान निर्माण से पूर्व इस राज्य में सम्मिलित होने वाली विभिन्न रियासतों में जो बिजलीघर थे उनका प्रमुख उद्देश्य उनके राजाओं की सुख-सुविधा के लिए बिजली सम्बन्धी आवश्यकता को पूरी करना था। किन्तु राजस्थान निर्माण के पश्चात् अब बिजलीघरों का उद्देश्य सार्वजनिक हित हो गया है, अर्थात् जनता की घरेलू, कृषि एव उद्योग-धन्धे, सम्बन्धी दिन प्रतिदिन

सार्वजनिक सम्पर्क कार्यालय, राजस्थान, उदयपुर द्वारा प्रकाशित 'राजस्थान में विद्युत विकास' से सामग्री स्वतन्त्रतापूर्वक एवं साभार ली गई है।

बढ़ती हुई विद्युत की आवश्यकताओं की पूर्ति करना है। विद्युत आज हम समस्याओं को सुलझाने का साधन है। इस समय राजस्थान में तीन समस्याएं हैं—(१) अनाज तथा अन्य कृषि पदार्थों की उपज में वृद्धि कर (२) उद्योग धन्धों की स्थापना एव विस्तार, और (३) नगरों तथा कस्बों अधिक पानी की व्यवस्था करना। राज्य में विद्युत विकास से इन तीनों समस्या के निवारण में अत्यन्त सहायता मिलेगी। राज्य का विद्युत-विभाग इस दि में प्रयत्नशील है कि १,३२,२२७ वर्गमील में विस्तृत इस विशाल राज्य विद्युत सम्बन्धी आवश्यकताए शीघ्र ही पूरी की जाय। नवीनतम आंकड़ों अनुसार राजस्थान में प्रति व्यक्ति विद्युत की खपत ४ किलोवाट [1] है।

स्थिति—एकीकरण के समय राज्य सरकार को अपनी इकाइयों १३ बिजली घर प्राप्त हुए थे। आर्थिक एव यांत्रिक, दोनों दृष्टियों से इ स्थिति सतोषजनक नहीं थी। इस समय राजस्थान में चल रहे बिजलीघरों दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है—(१) पूर्णतया विकसित बड़े विजलीघर, तथा (२) अल्प विकसित एव छोटे बिजलीघर। प्रथम श्रे के बिजलीघर जयपुर, बीकानेर, जोधपुर, कोटा, अलवर, भरतपुर और श्रीग नगर में हैं। दूसरी श्रेणी के बिजलीघर धौलपुर, डूंगरपुर, जैसलमेर, झाला किशनगढ, निवाई, शाहपुरा आदि स्थानों में हैं।

निर्माण के दो क्षेत्र—राजस्थान में विद्युत विस्तार के दो क्षेत्र एक तो बिजलीघरों की सभाल-सुधार पर ध्यान देना और दूसरा, नये बिजली की स्थापना। राज्य के विभिन्न नगरों और कस्बों में इन दो दिशाओं की तेजी से कार्य किया जा रहा है।

जयपुर—जयपुर में बायलर सहित ३,००० किलोवाट का एक इंजिन और एक २,५०० किलोवाट का इंजन चालू किया गया है। यहां २,५०० किलो वाट के दो इंजिन और तीन बायलरों वाला एक नया बिजलीघर भी कुछ समय से काम करने लगा है। जब तक चम्बल जल-विद्युत योजना कार्यान्वित नहीं हो जाती, तब तक इस विद्युत केन्द्र को और अधिक विकसित करने

[1] Basic Statistics Rajasthan 1957 P. 69

आवश्यकता बनी रहेगी। उक्त योजना सफल हो जाने पर जयपुर को उसी से बिजली देने की व्यवस्था की जावेगी।

बीकानेर—बीकानेर नगर में राज्य का दूसरा बड़ा बिजलीघर है। इस बिजलीघर में चार स्टीम टर्बो सैट हैं जिनसे ७,००० किलोवाट बिजली उत्पन्न होती है। यहा पानी की पूर्ति बिजली पर ही निर्भर है। यहा ट्रान्समिशन एव वितरण प्रणाली बहुत पुरानी हो चुकी है और उसमें भी विकास की आवश्यकता है।

जोधपुर—यहा विद्युत की माग में बहुत वृद्धि हो रही है। कुछ डीजल इन्जिन व बायलरों सहित दो इन्जिन भी लगाने की योजना है।

अलवर व भरतपुर—यहा पहले डी० सी० बिजली थी। इस प्रणाली को बदल कर यहा ए० सी० प्रणाली आरम्भ कर दी गई है।

प्रथम योजना में विद्युत विकास—थर्मल-शक्ति के विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत जयपुर, बीकानेर, कोटा, भरतपुर, गगानगर, जोधपुर, भीलवाडा और अलवर के बिजलीघरों में पुरानी मशीनों की मरम्मत की गई और नए यन्त्र लगाये गये। राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में १०८ मील लम्बी ट्रान्समिशन लाइनें डाली गई। भाखरा योजना से प्राप्त होने वाली बिजली को गगानगर, रायसिंह-नगर, रतनगढ़, फतहपुर, सीकर और जोबनेर तक पहुंचाने के लिए ट्रांसमिशन लाइनें बिछाने का कार्य चालू है। पहला पचवर्षीय योजना में बिजली का उत्पा-दन १९५१ में १३,००० किलोवाट से बढकर १९५६ में ८१,००० किलोवाट हो गया।

द्वितीय योजना में विद्युत विकास—द्वितीय पचवर्षीय योजना के अन्तर्गत पांच हजार की जन-संख्या वाले सब गांव और कस्बों को विद्युत दी जाने की योजना है। अनुमान है कि सन् १९६१ तक २.१७ लाख किलोवाट विद्युत उपलब्ध की जा सकेगी। इस समय सरकार द्वारा सञ्चालित २० विद्युत शक्ति केन्द्र हैं तथा २२ अन्य केन्द्र व्यक्तिगत पूंजी से चल रहे हैं। व्यक्तिगत पूंजी से चलने वाले विद्युत-केन्द्रों की भांति, जो सस्ती बिजली नहीं दे सकते, राज्य द्वारा लेने की योजना विचाराधीन है जिसके लिए द्वितीय पचवर्षीय योजना में ४०

लाख रुपये की राशि निश्चित की है। भाखरा व चम्बल योजनाओं मे जो विद्युत प्राप्त की जावेगी उसका संक्षिप्त परिचय नीचे दिया गया है।

भाखरा योजना—भाखरा-नागल योजना में पंजाब व राजस्थान सरकारों का क्रमश ८४'८ प्रतिशत और १५.२ प्रतिशत भाग है। इस योजना का बिजली का काम तीन चरणों में पूरा होगा। भाखरा बांध से ८ मील नीचे नागल बांध तैयार हो गया है जहां पर दो विद्युत गृह-प्रत्येक ७२ हजार किलोवाट विद्युत उत्पन्न करने वाले हैं। भाखरा बांध पूरा होने पर विद्युत उत्पन्न करने वाले चार ९०,००० किलोवाट विद्युत उत्पादन यन्त्र बांध पर स्थापित किए जावेंगे।

इस योजना से राजस्थान के लिए प्राप्य बिजली की शक्ति श्री गंगानगर और राजगढ को मिलेगी। इस योजना के कार्यान्वित होने के प्रथम वर्ष ही ६,००० किलोवाट तक बिजली राजस्थान को सुलभ हो जावेगी, और औद्योगिक तथा कृषि सम्बन्धी व अन्य विद्युत सम्बन्धी आवश्यकता बढ जाने पर सन् १९६२ में १५ हजार किलोवाट तक बिजली मिलने लगेगी। श्री गंगानगर और राजगढ से बीकानेर ६ जिलों के ६१ कस्बों व गांवों में ट्रांसमिशन लाइनों द्वारा बिजली ले जाई जावेगी। इससे लगभग ७ लाख जनसंख्या की विद्युत सम्बन्धी आवश्यकताए पूरी होंगी। बीकानेर, श्री गंगानगर, चूरू, झुंझुनू, नागौर और सीकर के साथ ही साथ मार्ग में पड़ने वाले ग्रामीण क्षेत्र बिजली की रोशनी से जगमगा उठेंगे। उद्योग धन्धों के लिए भाखरा नागल से प्राप्त होने वाली बिजली १॥ आना प्रति यूनिट के हिसाब से प्राप्त हो सकेगी।

चंबल योजना—चंबल जल-विद्युत योजना राजस्थान के लिए एक महान वरदान है। चंबल नदी के तीनों बांधों से २ लाख किलोवाट जल विद्युत उपलब्ध हो सकेगी। इन तीनों बांधों—गांधी सागर ६० हजार किलोवाट, राणा प्रताप सागर से ८० हजार किलोवाट और कोटा बांध से ६० हजार किलोवाट विद्युत प्राप्त हो सकेगी।

इस योजना का प्रभाव राजस्थान के दक्षिणी तथा पश्चिमी भूभाग पर भी पडेगा। चम्बल योजना के कार्यान्वित होने पर इन क्षेत्रों को पर्याप्त मात्रा में सस्ती विद्युत उपलब्ध हो सकेगी। इस योजना के अन्तर्गत एक ओर तो

जयपुर तक और दूसरी ओर ग्वालियर तक विद्युत दी जा सकेगी। इस प्रकार चम्बल जल-विद्युत योजना और जयपुर के बिजली घर का भी परस्पर सम्बन्ध हो जावेगा। जयपुर से अजमेर व नसीराबाद तक विद्युत पहुँचाई जावेगी। इस प्रकार चम्बल की विद्युत फुलेरा, किशनगढ, अजमेर व नसीराबाद को प्राप्त होगी। चम्बल योजना के पहले भाग में निम्नलिखित स्थानों को विद्युत मिलेगी—

१. गांधी सागर से कोटा

२ कोटा से लाखेरी व सवाई माधोपुर होती हुई जयपुर तक

३ कोटा से अजमेर

४. कोटा से भीलवाड़ा

५. सवाई माधोपुर से निवाई

६ सवाई माधोपुर से गंगापुर

इस योजना के क्रियान्वित होने पर बडे मध्यम व छोटे उद्योगों, कृषि कार्यों, एव अन्य प्रयोजनों को कम दरों पर विद्युत प्राप्त हो सकेगी। इस विद्युत की सहायता से कोटा के उत्तरी-पश्चिमी भाग में १५० मील लम्बी नहर के अन्दर पम्पों से पानी पहुँचाया जायगा जिससे वर्ष पर्यन्त सिंचाई होगी और गन्ने की उपज बढेगी जिससे शक्कर के कारखानों के विकास में सहायता मिलेगी। जयपुर, उदयपुर, कोटा व जोधपुर डिवीजनों को इससे लाभ होगा।

— —

अध्याय : दस

प्रमुख खनिज-पदार्थ

राजस्थान अपने विशाल क्षेत्र के गर्भ में अनेक खनिज-पदार्थ छिपाये हुए है। खनिजों का विशाल अज्ञात क्षेत्र राजस्थान में पड़ा है और बहुत से ज्ञात खनिज का सुविधाओं तथा साधनों के अभाव में दोहन नहीं हो सका। खनिज पदार्थों की दृष्टि से भारत में बिहार व मध्य-प्रदेश के पश्चात् राजस्थान का ही स्थान है। इस प्रकार खनिज-सम्पत्ति की दृष्टि से राजस्थान का भारत में तीसरा स्थान [1] है।

यह ज्ञात है कि प्राचीन चट्टानों में अनेक खनिज पदार्थ होते हैं। राजस्थान में अरावली पर्वत श्रेणिया रचना की दृष्टि से अत्यन्त प्राचीन हैं अतः इसके अनेक भागों में खनिज पदार्थ हैं। वैसे तो राजस्थान में पाये जाने वाले खनिज पदार्थ बहुत अधिक हैं किन्तु अभी लगभग ३० प्रकार [2] के खनिज-पदार्थों का विदोहन छोटे तथा बड़े पैमाने पर हो रहा है। राजस्थान में छोटी व बड़ी लगभग २,२५० खानों पर कार्य हो रहा है जिनमें लगभग १ लाख व्यक्ति कार्य करते हैं [3]। राजस्थान में पाए जाने वाले प्रमुख-खनिज निम्नलिखित हैं—

(१) अभ्रक—अभ्रक के उत्पादन की दृष्टि से राजस्थान का भारत में बिहार के पश्चात् दूसरा स्थान [4] है तथा अभ्रक क्षेत्र की दृष्टि से प्रथम

1—Rajasthan–A Symposium, p 60

2—'Hindustan Times,' Rajasthan Supplement of March 30, 1955 p 5

3—सक्सेना तथा दुक्कू—'हमारे देश का आर्थिक व व्यापारिक भूगोल,' पृष्ठ ४१२

4—वही

स्थान [5] है। राजस्थान मे अभ्रक क्षेत्र १२ हजार वर्ग मील में विस्तृत है [6]। इस खनिज की खानें जयपुर, अजमेर व उदयपुर जिलों [7] मे हैं। सबसे अधिक अभ्रक उदयपुर जिले से प्राप्त होता है। अभ्रक की प्रमुख खानें भीलवाड़ा, अजमेर, ब्यावर, किशनगढ, टोंक, बांसवाडा व डूंगरपुर में हैं। राजस्थान में अभ्रक के सबसे पहले ठेके सन् १६३० के लगभग दिए गये थे। आजकल लगभग ८०-८५ लाख रुपये के मूल्य का अभ्रक राजस्थान की खानो से निकाला जाता है।

(२) मैंगनीज—यह महत्वपूर्ण धातु उदयपुर, बांसवाड़ा, कुशलगढ और अजमेर की खानों से प्राप्त होती है आजकल प्रति वर्ष ६-७ हजार टन मैंगनीज इन खानो मे प्राप्त हो रही है। सन् १६५६ मे इस खनिज की ओर राज्य के उद्योगपतियों का ध्यान विशेषरूप से आकर्षित हुआ है।

(३) लोहा—राजस्थान में लोहे की भी अनेक खानें हैं। मुख्य खानें दौसा के निकट नीमला, झुंझुनू, सीकर, अलवर में भानगढ, उदयपुर, बांसवाडा, डूंगरपुर आदि में हैं। किन्तु राज्य के औद्योगिक क्षेत्र में पिछड़े होने, सस्ती विद्युत की अनुपलब्धता व अन्य शक्ति के साधन के अभाव में इन खानों का विकास नहीं हो पाया है। जितना भी लोहा निकाला जाता है प्रायः सभी राजस्थान के बाहर भेज दिया जाता है।

(४) कोयला—बीकानेर के निकट पलाना में कोयले की एक छोटी खान है जिसमें से भूरे रंग का ('लिग्नाइट') कोयला निकाला जाता है। यह कोयला उच्च श्रेणी का नहीं है। सन् १६५८ में पलाना की कोयले की खान के समीप ही एक और खान का पता लगा है। इनके अतिरिक्त बीकानेर, जोधपुर और जैसलमेर क्षेत्र में भी कोयले के भण्डार होने की सम्भावना है।

(५) खड़िया—भारत में सबसे अधिक खड़िया (Gypsum) राजस्थान से ही प्राप्त होता है। अधिकांश सिन्दरी (बिहार) के खाद के

५—राजस्थान परिचय ग्रन्थ—पृष्ठ १६४

६—वही

७—Basic Statistics, 1957 p 64

कारखानों को भेज दिया जाता है। सबसे अधिक जिप्सम बीकानेर डिवीजन जामसर से प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त जोधपुर, बाड़मेर, नागौ जैसलमेर में भी इसकी खानें हैं।

(६) सोप स्टोन—भारत में सबसे अधिक सोप-स्टोन (घीया प या सेलखड़ी) राजस्थान से ही प्राप्त होता है। उदयपुर, जयपुर, (दौ डूंगरपुर, बांसवाड़ा व कोटा में इसकी खानें हैं। अधिकांश सोप-स्टोन वि को निर्यात कर दिया जाता है।

(७) चांदी—उदयपुर में जावर की खानों से चांदी प्राप्त की ज है। राजस्थान में अन्यत्र चांदी की खान नहीं है।

(८) तांबा—तांबे की प्रमुख खान खेतड़ी के निकट सिंघाने में इसके अतिरिक्त उदयपुर, बीकानेर व कोटा में भी खानें हैं।

(९) तामड़ा—यह हरे रंग का मूल्यवान पत्थर होता है। इसकी भीलवाड़ा, टोड़ारायसिंह और सरवाड़ (जयपुर) में हैं।

(१०) सीसा व जस्ता—ये भी उदयपुर के निकट जावर की खान मिलते हैं। इसके अतिरिक्त, अजमेर जयपुर, भरतपुर, और बांसवाड़ा म कुछ खानें हैं।

(११) बिरल—यह अणु शक्ति उत्पन्न करने के काम में आती इस धातु को खरीदने का एकाधिकार भारत सरकार को ही है। इसकी अजमेर, ब्यावर, नसीराबाद, उदयपुर, जोधपुर, जयपुर व डूंगरपुर में इसके उत्पादन की मात्रा बहुत कम है।

(१२) टंगस्टन—भारत में केवल एक स्थान जोधपुर क्षेत्र में डे स्टेशन के निकट एक पहाड़ी के पास है।

(१३) यूरेनियम—यह भी अणु-शक्ति सम्बन्धी खनिज है। इ स्थान किशनगढ़, बांसवाड़ा और डूंगरपुर क्षेत्र में हैं। इसके उत्पादन की भी बहुत कम है।

(१४) एसबसटोस–यह एक ऐसा खनिज है जिसकी चादरें (टीन जैसी) पाइप आदि बनाए जाते हैं। इसकी खानें भीलवाड़ा, व उदयपुर में है। अलवर के निकट भी इसकी खानों का पता लगा है।

(१५) नीला थोथा व फिटकरी–झुंझुनू जिले में कहीं कहीं इसकी खानें हैं किन्तु निकाली जाने वाली मात्रा बहुत ही कम है।

(१६) चूने का पत्थर–जोधपुर में सिरोही व गोटन, जयपुर में सवाई-माधोपुर, कोटा में लाखेरी, उदयपुर में चित्तौड़ तथा बीकानेर में चूने के पत्थर की अनेक खानें हैं।

(१७) इमारती पत्थर– जोधपुर में मकराने का संगमरमर प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त जोधपुर में भूरे व लाल रंग का पत्थर भी मिलता है। उदयपुर व डूंगरपुर में काला पत्थर और जैसलमेर में पीला पत्थर मिलता है। करौली धौलपुर, भरतपुर के निकट भी लाल रंग का इमारती पत्थर निकाला जाता है।

(१८) गेरू–गेरू मिट्टी की खानें अलवर, सवाई माधोपुर और जैसल-मेर में पाई जाती हैं।

(१९) स्लेट–स्लेट का पत्थर चिकना और काले रंग का होता है। अलवर जिले में स्लेट के पत्थर की अनेक खानें हैं।

(२०) अन्य खनिज–इसके अतिरिक्त मुल्तानी मिट्टी (जोधपुर व बीकानेर क्षेत्रों में), एमेरल्ड (उदयपुर में), इमेनाइट (जोधपुर में) तथा अन्य अनेक खनिज पाये जाते हैं।

प्रो० एम० वी० माथुर के शब्दों में "राज्य भर में खनिज पदार्थों के विकास की संभावनाओं को आशा भरी दृष्टि से देखा जा सकता है... साथ ही औद्योगिक विकास की संभावनाएं और भी बढ़ गई हैं।" [1]

1–प्रो० एम० वी० माथुर, अध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा लिखित 'राजस्थान में विकास व समृद्धि की योजनाएं' लेख से।

जोधपुर—यह नगर २६°।८' उत्तरी अ
देशांतर पर स्थित है। यह रेलमार्ग द्वारा देहली से ल
५६० मील और कलकत्ता से १३३० मील दूर है।

स्थान का प्रमुख नगर है। क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान का सबसे बड़ा नगर है।

जोधपुर नगर सन् १४५९ में राव जोधाजी ने बसाया था और पहले के जोधपुर राज्य की राजधानी था। नगर के चारों ओर मजबूत परकोटा है जिसे अठारहवीं शताब्दी के मध्य में बनवाया गया था, तथा यह परकोटा २४,६०० फीट लम्बा, १५ से ३० फीट ऊंचा और ३ से ८ फीट चौड़ा है। इस परकोटे में छः द्वार हैं जिनमें से पाच दरवाजों के नाम उन कस्बों के नाम पर हैं जिनके सामने वे पड़ते हैं जैसे जालौर, मेड़ता, नागौर, सिवाना और सोजत, छठे द्वार का नाम चादपोल है क्योंकि इस दिशा में नये चाद का उदय होता है।

यह इस भाग का प्रमुख व्यापारिक केन्द्र है किन्तु औद्योगिक दृष्टि से बहुत अधिक विकसित नहीं है। यहा हड्डी पीसने का एक कारखाना, छतरिया बनाने का एक कारखाना व रासायनिक पदार्थ बनाने का एक कारखाना है। यहा भी कपड़े की रगाई, छपाई व बधाई बहुत अच्छी होती है। हाथी दात के काम के लिए प्रसिद्ध है। निकट ही मकान की छत पाटने की पट्टिया व संगमरमर निकलता है। यह उत्तरी रेलवे का प्रमुख स्टेशन है। यहा का हवाई अड्डा अन्तर्राष्ट्रीय महत्व का है।

यहां अनेक दर्शनीय स्थान हैं जिनमें किला, जसवन्तबाड़ा, पब्लिक पार्क आदि मुख्य हैं। निकट ही प्रताप सागर व बाल समन्द झीलें हैं। अब यहां राजस्थान का हाईकोर्ट जयपुर से स्थानान्तर कर दिया गया है।

कोटा—यह नगर २५°११' उत्तरी अक्षाश तथा ७५°५१ पूर्वी देशान्तर पर राजस्थान के दक्षिणी पूर्वी भाग में चम्बल नदी के दाहिने किनारे पर बसा हुआ है। यह नागदा-मथुरा रेलमार्ग पर स्थित है। यह अजमेर के दक्षिण-पश्चिम में लगभग १२० मील दूर है।

रेल व सड़कों का केन्द्र होने के कारण यह एक व्यापारिक केन्द्र बन गया है। अभी तक इसका औद्योगिक विकास पूरा नहीं हुआ है। यहा रस्सा बनाने की एक मिल, रबर के खिलौने आदि बनाने का एक कारखाना और

कच्चा लोहा भी हमारे राजस्थान में बहुतायत से उपलब्ध है जिस पर अभी तो निजी पूंजी का अधिकार है किन्तु केन्द्रीय सरकार की औद्योगिक नीति के अनुसार सरकार का ही उस पर धीरे धीरे नियन्त्रण किया जायेगा।

औद्योगिक दृष्टि से राजस्थान में निश्चय ही अधिक कारखानें नहीं हैं। कुछ कपडे की मिलें, शक्कर के, तेल के, हड्डियों के चूरे, काच, सीमेंट, जिनिग व प्रेसिग आदि के कुछ कारखाने राज्य में हैं किन्तु राज्य का विस्तार देखते हुए इनकी सख्या बहुत ही कम है। प्रायः सभी कारखानों पर निजी पूजी का अधिकार है और भारत सरकार की नीति के अनुसार इन सर्व कारखानों में निजी पूजी ही रहेगी।

उपरोक्त औद्योगिक स्थिति के विवेचन से हमें दो बातें ज्ञात होती हैं—प्रथम, हम औद्योगिक रूप में बहुत पिछडे हुए है, और द्वितीय, यदि हम राजस्थान का औद्योगिक विकास चाहते हैं तो अभी बहुत समय तक हमें निजी पूजी को आमत्रित करना पडेगा, क्योंकि सरकारी (अर्थात् सार्वजनिक) क्षेत्र सरकार अपनी आय में से कुछ विशेष खर्च नहीं कर सकते। हम राजस्थान में समाजवाद की स्थापना की समस्या पर विचार करते हुए औद्योगिक रूप से विकसित अन्य राज्यों के अनुभवो से लाभ उठा सकते हैं, किंतु उन्हीं के अनुकूल स्वय का कार्यक्रम नही बना सकते।

कृषि का दृष्टिकोण—उद्योगों को निजी-पूजी के क्षेत्र में छोड देने के पश्चात् राजस्थान के आर्थिक उत्पादन क्षेत्र में केवल कृषि एव तत्सबधी वस्तुओं का उत्पादन ही शेष रह जाता है। राजस्थान की अधिकाश जन सख्या कृषि तथा उससे सबधित उद्योगों पर अवलम्बित है। अभी राजस्थान में जागीरदारी का अत हुए बहुत समय नहीं हुआ है। परन्तु पुराने आर्थिक सबध आज भी बहुत सीमा तक चले आ रहे हैं। ऐसा अनुभव किया जा रहा है कि प्रत्येक वर्ष कृषक अपने अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक बन रहा है। जागीरदारी उन्मूलन एव अन्य भूमि सुधारों के कानूनों से कृषकों को अनेक नवीन अधिकार मिले हैं, किंतु ऐसे कृषकों की सख्या आज भी बहुत है जिनके पास भूमि नहीं है और वे दूसरों की भूमि पर मजदूरी करते हैं। जिन कृषकों के पास स्वय की थोड़ी बहुत जमीन है वह पारिवारिक बटवारे के कारण अनुत्पादक बन चुकी है। खुदकाश्त के

नाम से मिली हुई जमीनों पर निजी-स्वामित्व है और आशा है ऐसी पर्याप्त समय तक परिस्थिति रहेगी।

इस प्रकार जागीरदारी उन्मूलन से किसानों का दुहरा-तिहरा शोषण समाप्त हो गया, किसानों के जीवन से जागीरी-जुल्म भी समाप्त हो गया किन्तु अभी तक भूमि का विषम बटवारा समाप्त नहीं हुआ और आज भी समस्त भूमि सरकार अथवा वैयक्तिक जायदाद के अन्तर्गत आती है। जमीन पर अभी-'जो जोतता है, उसही की भूमि' का सिद्धात स्वीकार नही किया गया है। सरकार फसल का 1/6 भाग अथवा निश्चित लगान लेती है।

समाजवादी रूप मे परिवर्तन—कृषि की उपर्युक्त अवस्था को देखते हुए, राजस्थान में इस उत्पादन के विशेष प्रकार के वैयक्तिक सबधों को बदलकर समाजवादी रूप में ढालना है। वैसे तो जमीन पर सरकार का अधिकार है — अर्थात् समाज का ही अधिकार हुआ। और इधर किसान द्वारा लगान देना उस पर उत्पादन करना है—तथा उत्पादित वस्तु का कुछ भाग सरकार को देता है। तब तो समाजवादी रूप चल ही रहा है— यह शका मन में उठती है। किंतु यह सोचना ठीक नहीं होगा, क्योंकि इस स्थिति में जमीन पर अधिकार एक व्यक्ति का मानना पड़ता है जिससे कि भविष्य में किसी एक के हाथ में पूंजी जमा होने का खतरा बना रहता है और उस पर नियत्रण रखना कठिन है। दूसरी बात यह है कि वैयक्तिक पूंजी के मोह का बीज जो किसान में रहता है—वह हमेशा बना रहेगा और इस प्रकार हम कभी भी किसान को उत्पादन के साधनों पर सामाजिक अधिकार की बात को नही समझा सकेंगे। तीसरी बात यह है कि आज खेती-बाड़ी में नयी नयी मशीनों के कारण हमारे देश के छोटे-छोटे खेत उत्पादन की दृष्टि से व्यर्थ बन गये हैं अतः खेतों के क्षेत्र को विस्तृत करके ही, राजस्थान के ऐश्वर्य में वृद्धि कर सकते हैं।

राजस्थान की द्वितीय पंच वर्षीय योजना और समाजवाद—इस स्थान पर राजस्थान की द्वितीय पंच-वर्षीय योजना के विषय में भी कुछ चर्चा करना आवश्यक प्रतीत होता है जिसमें सबसे अधिक व्यय कृषि व उससे संबधित मदो पर ही करने का निर्णय किया गया है। समाजवाद की स्थापना के लिए

जहा यह आवश्यक है कि जनता के पारस्परिक सहयोग के आधार पर उत्पादन के साधनों पर सामाजिक अधिकार प्राप्त किया जाय—वहा यह भी आवश्यक है कि उत्पादन के साधन तीव्र गति से विकसित किया जाय ।

यदि इन नए साधनों में विकास की गति धीमी रही तो समाजवाद की स्थापना में भी देरी लगेगी । इसका व्यावहारिक पक्ष हमें तब देखने को मिलता है जब गगानगर, सूरतगढ और बीकानेर के अन्य रेतीले भागों में नहरें (गग नहर व शाखाए) आकर उन्हें सीचकर हरा-भरा बना देती हैं । इसी प्रकार चबल, जवाई तथा अन्य बाध राजस्थान की कृषि में धीरे धीरे एक क्रातिकारी परिवर्तन उपस्थित कर रहे हैं, और पुराने आर्थिक सबधों के स्थान पर नए विकसित सबधों का निर्माण कर रहे हैं । साथ ही यहा राजस्थान नहर का उल्लेख करना भी आवश्यक है जिससे जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर व बीकानेर का बिल्कुल रेतीला भाग भी सींचा जा सकेगा । इन विकासमय योजनाओं के आधार पर ही जमीन पर सामाजिक अथवा पारस्परिक सहयोगी आर्थिक सम्बन्धों का निर्माण किया जा सकता है ।

कुछ विचार—इस प्रकार हम कृषि उत्पादन के तीन सम्बन्धों के क्रम को समझना चाहेंगे—(१) स्वामित्व की दृष्टि से भूमि की स्थिति, (२) उत्पादन के साधनों में प्रगति, जिसके कारण पुराने 'स्वामित्व' की सीमाए टूटती हैं या टूट रही हैं और (३) साधनों की प्रगति एव स्वामित्व के सघर्ष को जनवादी ढग से सुलझाने का प्रयत्न । राजस्थान में आज हम तीसरे क्रम में से निकल रहे हैं और विकास की गति को तीव्र करने के लिए दूसरे सम्बन्ध को अधिकाधिक प्रयोग करना चाहते हैं ।

हमारा विचार है कि राजस्थान में समाजवाद की स्थापना का तात्पर्य है राजस्थान के आर्थिक सम्बन्धों में आमूल परिवर्तन लाना और ये आर्थिक सम्बन्ध मुख्य रूप से हमारे कृषि-उत्पादन पर निर्भर करते हैं । अत हमें आने वाले काफी वर्षों तक इस प्रकार की योजना अपनानी हैं कि जिससे हम सीधे खेतिहर राज्य से प्रगतिपूर्ण औद्योगिक समाजवादी राज्य में बदल सकें । इस समय हमारा समाजवाद का प्रश्न उद्योगों से सम्बन्धित न होकर केवल कृषि से सम्बन्धित हो सकता है, किन्तु कृषि एव नए उद्योगों के सम्बन्धों को भी वैज्ञानिक समाजवादी प्रणाली के आधार पर हमें विकसित करने पडेगे ।

इस समय राजस्थान सरकार (केन्द्रीय सरकार की सहमति एवं मार्ग-प्रदर्शन से) कृषि-उत्पादन में सहकारिता को बढ़ाने का उपक्रम कर रही है. वह ही समाजवादी कृषि सम्बन्धों को उत्पन्न करने में सफल हो सकती है। साथ ही समाजवाद केवल आर्थिक परिवर्तन ही नहीं है—वह आर्थिक परिवर्तन के साथ मनुष्य के रचनात्मक मूल्यों में भी परिवर्तन उपस्थित करती है। इसके लिए हमारे सामुदायिक विकास खंड एवं राष्ट्रीय-सेवा-खंड प्रयत्न कर रहे हैं।

यह सब होते हुए भी आज आवश्यकता इस बात की भी है कि राजस्थान के अर्थशास्त्री राजस्थान में आर्थिक विकास के ऐतिहासिक क्रम के आधार पर राजस्थान के भावी समाजवादी रूप को पाने के प्रयत्नों को खोजने का प्रयास करें। समाजवाद केवल शब्द ही नहीं है, वह मनुष्यों के आर्थिक, सामाजिक राजनैतिक एवं शासन-सम्बन्धी सम्बन्धों की व्यवस्था का एक नाम है, उसके हजारों, लाखों व्यवहारिक पक्ष हैं और यदि इनको वास्तव में राजस्थान को एक समाजवादी भारत की इकाई बनाना है तो इस प्रश्न पर गम्भीरता से सोचना होगा।[1]

---

[1] 'विकास' से आभार सहित

परिशिष्ट

विभिन्न परीक्षाओं के कुछ प्रश्न

B. COM COMMERCIAL GEOGRAPHY

1 Describe the irrigation facilities available in Rajasthan To what extent are these facilities likely to increase within the next few years ?

(1958, Q 4)

2 Write an account of the geographical site and discuss the commercial/industrial importance of Jaipur

(1958, Q 3)

3 Write geographical account of Rajasthan with reference to distribution of population and trade centres.

(1957, Q. 8)

B. COM LANGUAGES I

4 वृहद् उद्योग विकास की राजस्थान में समवता (पच वर्षीय योजना के आधार पर) ।

(1957 Q 2)

5. Write an essay on 'Industrial Resources of Rajasthan

(1954, Q 1 (e))

6 Write an essay on 'Land Reforms in Rajasthan'

(1953, Q 1 (c))

7 Write an essay on 'Power Resources and their utilisation in Rajasthan'

(1952 Q 1 (c))

8 Write an essay on 'Rural Development in Rajasthan'

(1951, Q 1 (c))

B. COM. ECON. DEVELOPMENT

9 In what ways can multi-purpose cooperative societies benefit the peasantry of Rajasthan ?

(1956 Q, 8)

I. COM. COMMERCIAL GEOGRAPHY

10 भारतवर्ष में कुटीर-व्यवसायों के उन्नत होने की सुविधाएं कहां तक प्राप्त हैं ? राजस्थान के प्रमुख कुटीर-व्यवसायों के नाम लिखिए और उनमें से किसी एक की वर्तमान स्थिति तथा भविष्य पर प्रकाश डालिए। (1958 Q 6)

11 राजस्थान की खनिज-सम्पत्ति का विवरण दीजिए। (1957 Q 3)

12. राजस्थान में सिंचाई के कौन कौन से साधन काम में लाये जाते हैं ? राजस्थान में बनाये जाने वाली सिंचाई की विभिन्न योजनाओं का विवरण दीजिए। ये योजनायें पूरी हो जाने पर राजस्थान के कौन कौन से भाग को लाभ पहुंचेगा ? (1956, Q. 4)

13 राजस्थान अथवा उत्तर प्रदेश का आर्थिक भूगोल संक्षेप में वर्णन कीजिए। (1953, Q. 2)

14 भारत में सिंचाई के प्रमुख साधनों का विवेचन कीजिए। आप इनमें से राजस्थान के लिए कौन सा साधन उपयुक्त समझते हैं ! कारण बतलाइये। (1952, Q. 7)

15. भारत में सिंचाई के विकास होने के कारण विस्तार में बतलाइये। राजस्थान में सिंचाई के विकास होने के लिए आपके क्या सुझाव हैं ? (1950 Q 3)

I. COM. INDUSTRIAL ORGANISATION

16 राजस्थान के कुटीर उद्योग एवं उनके विकास पर एक लेख लिखिए। (Paper I, 1957, Q. 10)

17. राजस्थान में सहकारिता आन्दोलन की असन्तोषजनक प्रगति के क्या कारण हैं ? इनके विकास के लिए सुझाव दीजिए। (Paper II, 1955, Q. 12)

18. यदि आप राजस्थान के कृषि मन्त्री नियुक्त कर दिये जायें तो आप कौन कौन से कुटीर एवं लघु उद्योगों को प्रोत्साहन देंगे और क्यों ? (Paper II, 1955, Q. 14)

19 राजस्थान औद्योगिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ क्यों है ? राजस्थान में कौन कौन से उद्योगों का विकास किया जा सकता है और क्यो ?

(Paper I 1955, Q. 7)

20 राजस्थान में कुटीर उद्योगों का विकास क्यों हुआ ? कुछ अन्य कुटीर उद्योगों के नाम लिखिए, जो आपकी राय में, राज्य के स्थापित करना लाभप्रद होंगे । (Paper I, 1954 Q 9)

21 सिंचाई के लाभ बतलाइये । राजस्थान सरकार द्वारा बनाई जाने वाली कुछ सिंचाई-योजनाओं का उल्लेख कीजिए ।

(Paper II, 1954, Q 3)

22 राजस्थान के औद्यगिक रूप से पिछड़े होने के क्या कारण हैं ? स्थिति को सुधारने के लिए सुझाव दीजिए । (Papar I, 1953, Q 2)

23 राजस्थान के प्रमुख कुटीर-उद्योग कौन कौन से हैं ? इनकी स्थिति को सुधारने के लिए सरकार को क्या करना चाहिए ?

(Paper I 1952, Q 10)

24 राजस्थान औद्योगिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ क्यों है ? राजस्थान में कौन कौन से उद्योगों का विकास किया जा सकता है और क्यों ?

(1951, Q 4)

25 राजस्थान के भावी औद्योगिक विकास की सम्भावनाओं की विवेचना कीजिए । (Paper I, 1950, Q 10)

I. COM. BANKING

26. 'राजस्थान में बैंकिंग विकास' का संक्षिप्त विवेचन कीजिए ।

(Paper II, 1956, Q. 9)